तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 11, अंक - 9, अगस्त 2023 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

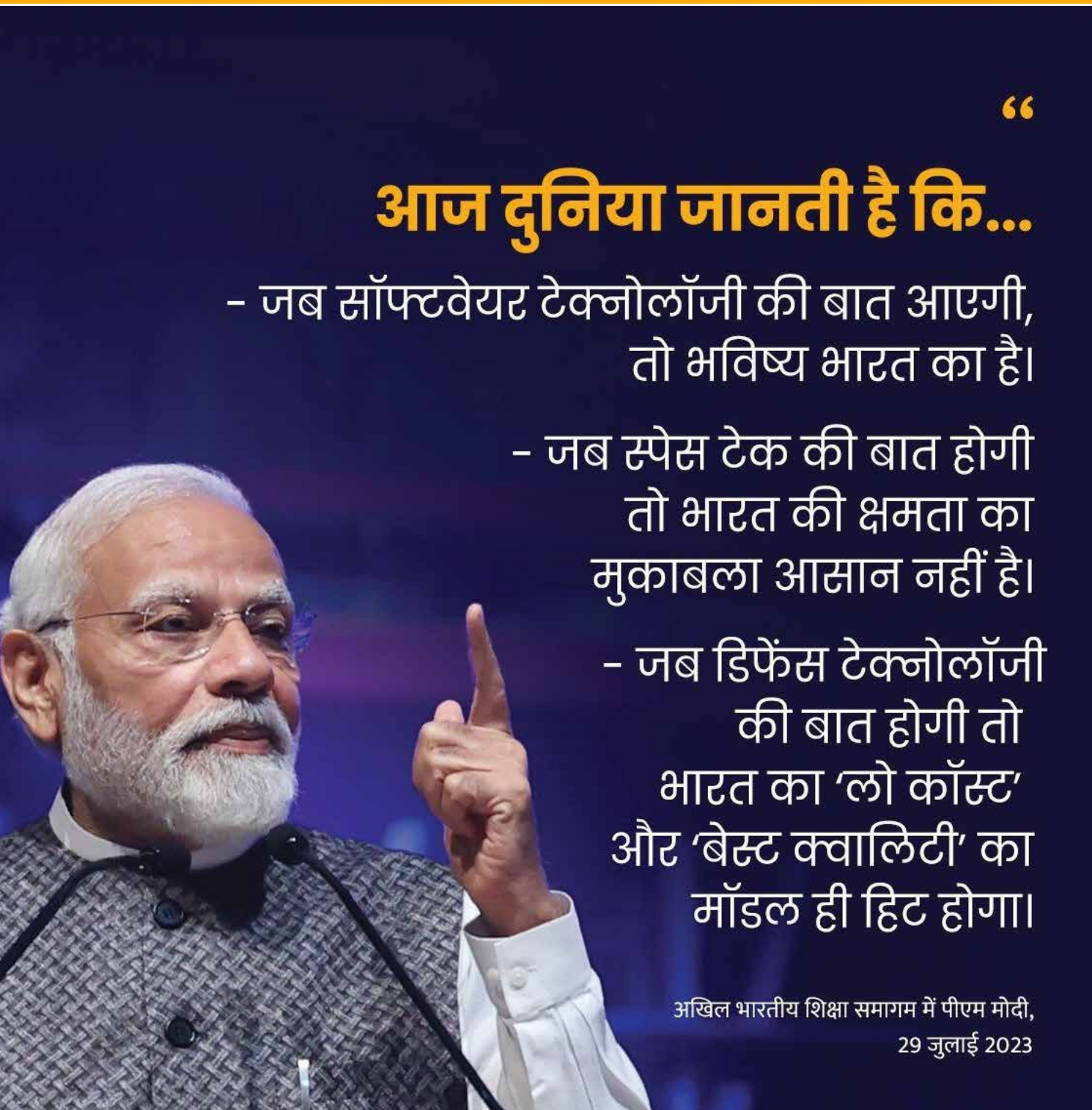

विनती

हे वागीशा, मात शारदे,
दो ऐसा वरदान।
ज्ञानवान हों हम सब बच्चे,
पढ़ें लगा कर ध्यान।

निरक्षरता का मिटे अँधेरा,
चहुँदिस ज्ञान प्रभा का फेरा।
विश्व गुरु बने देश हमारा,
है इतना अरमान।

अवगुण सभी हमारे हरना,
सद्भावों से मन को भरना।
नेक काम से पाएँ जग में,
एक नई पहचान।

मानवता का धर्म निभाएँ,
विपद देख हम न घबराएँ।
काम करें वह पूरा अवश्य,
लें मन में जो ठान।

जग में अपना नाम कमाएँ,
वक्त पड़े पर प्राण लुटाएँ।
काम देश के आएँ सबको,
याद रहे बलिदान।

राजपाल सिंह गुलिया (पूर्व शिक्षक)
गाँव- जाहिदपुर, डाकघर- ऊँटलौधा
तहसील व जिला- झज्जर, हरियाणा

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

अगस्त 2023

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
स्कूल शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
राजेश खुल्लर
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. अंशज सिंह
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ. आर.एस. ढिल्लों
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सतपाल शर्मा
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Sunita Devi on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,

New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

> मैंने बातूनी आदमी से चुप रहना, झगड़ालू से धीरज रखना और क्रूर से दयालुता सीखी है, परंतु आश्चर्य...मैं इन तमाम गुरुओं के प्रति कितना ना-शुक्रा हूँ।
>
> - खलील जिब्रान

- एनईपी सामाजिक न्याय की दिशा में एक उल्लेखनीय कदमः प्रधानमंत्री 5
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति : पुरातन तथा नवीन भारत का समावेश 12
- नयी शिक्षा नीति के साथ बदलने को तैयार हरियाणा के स्कूल 18
- क्या है एनईपी में केजी टू पीजी की अवधारणा ? 22
- गणित शिक्षण को सरल बनाता एक अनूठा गणित पार्क 24
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- युवा-पीढ़ी को पढ़ाना होगा नैतिकता का पाठ 30
- हरियाली तीज 31
- Revamping Education with Vocational Skills 32
- Hard Rain 34
- Maintain Stability in Your Behaviour 35
- Parenting Through Meaningful Conversations 36
- The Sweetest Surprise 37
- Magical Monsoon Adventures 38
- Monsoon Diseases in India... 40
- Exploring the Latest Career Choices... 42
- The Significance of Indian Independence Day... 46
- Celebrating the Vibrant Teej Festival in Haryana... 48

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

वैश्विक परिदृश्य आधारित शिक्षा नीति

काल कोई भी रहा हो, ज्ञान का महत्त्व सदैव रहा है। वर्तमान शताब्दी तो ज्ञान की ही शताब्दी है।आज वही सफल है जो अपने ज्ञान का लोहा मनवाने में सफल है। ऐसे लोग ही किसी देश के असली संसाधन हैं। यह स्वयं सिद्ध है कि किसी देश का विकास वहाँ की शिक्षा-व्यवस्था पर निर्भर करता है।अतएव तेज़ी से बदलते वैश्विक स्तर के अनुरूप शिक्षा-नीति में बदलाव लाना भी वक्त की माँग बन गई थी।

देश की शिक्षा नीति में परिवर्तन को लंबे समय के उपरांत स्वीकृति मिली है। यह परिवर्तन प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक में किया गया है। इस नीति के आने से देश और समाज में एक क्रांतिकारी परिवर्तन की संभावना को देखा जा रहा है। पाठ्यक्रम से आगे जाकर विद्यार्थियों की विश्लेषणात्मक सोच को विकसित करने पर बल दिया गया है, विशेष संकाय चुनने के दबाव को समाप्त किया गया है, आरंभिक कक्षाओं से ही विद्यार्थियों को वोकेशनल एक्सपोजर देने से युवा ज़िंदगी के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो सकेंगे। साथ ही देश में ही मनपसंद रोज़गार पाने में सक्षम बनेंगे।

प्रदेश ने इस दिशा में तैयारियाँ आरंभ कर दी हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी संकल्प ले चुके हैं कि हम इसे 2025 तक प्रदेश में लागू करेंगे। नई शिक्षा नीति व प्रदेश की तैयारियों की विशद जानकारी प्रस्तुत अंक के माध्यम से दी जा रही है। आइये, पूरे मन से इस नीति का स्वागत करें। 'शिक्षासारथी' आपकी शिक्षण-यात्रा में सदैव आपके साथ है। आपके विचारों, सुझावों व प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है।

-संपादक

एनईपी सामाजिक न्याय की दिशा में एक उल्लेखनीय कदमः प्रधानमंत्री

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की तीसरी वर्षगाँठ पर भारत मंडपम् में आयोजित हुआ अखिल भारतीय शिक्षा समागम

डॉ. प्रदीप राठौर

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बीते दिनों दिल्ली में भारत मंडपम में अखिल भारतीय शिक्षा समागम का उद्घाटन किया। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की तीसरी वर्षगाँठ के समय के साथ-साथ ही आयोजित हुआ। उन्होंने पीएम श्री योजना के तहत फंड की पहली किस्त भी जारी की। 6207 स्कूलों को कुल 630 करोड़ रुपये की राशि के बराबर की पहली किस्त प्राप्त हुई, उन्होंने 12 भारतीय भाषाओं में अनूदित शिक्षा और कौशल पाठ्यक्रम की पुस्तकों का भी विमोचन किया। प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने उन कारकों में शिक्षा की प्रधानता रेखांकित की जो राष्ट्र के भाग्य को बदल सकते हैं। उन्होंने कहा, '21वीं सदी का भारत जिन लक्ष्यों के साथ आगे बढ़ रहा है, उन्हें अर्जित करने में हमारी शिक्षा प्रणाली की बहुत बड़ी भूमिका है।' अखिल भारतीय शिक्षा समागम के महत्त्व पर जोर देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि शिक्षा के लिए चर्चा और संवाद महत्त्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री ने वाराणसी के नवनिर्मित रुद्राक्ष सम्मेलन केंद्र में हुए पिछले अखिल भारतीय शिक्षा समागम और इस वर्ष के अखिल भारतीय शिक्षा समागम के बने नए भारत मंडपम में होने के संयोग का उल्लेख किया। औपचारिक उद्घाटन के बाद मंडपम में यह पहला कार्यक्रम था।

प्रधानमंत्री ने कहा कि काशी के रुद्राक्ष से लेकर आधुनिक भारत मंडपम् तक प्राचीन और आधुनिक के सम्मेलन की अखिल भारतीय शिक्षा समागम की यात्रा में एक संदेश छिपा हुआ है। उन्होंने कहा कि एक तरफ

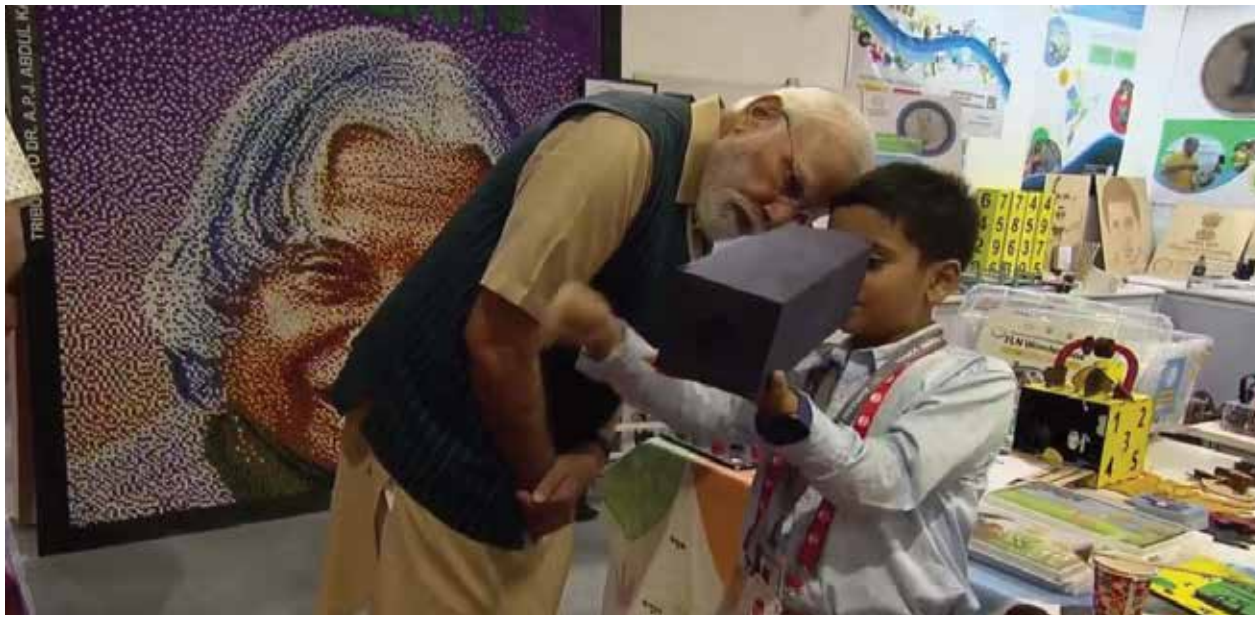

एनईपी समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त करेगी

शिक्षा माननीय प्रधानमंत्री जी की सर्वोच्च प्राथमिकता का विषय रहा है। लंबे समय के बाद देश में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 क्रियान्वित की जा रही है। इस शिक्षा नीति की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह शिक्षा को मात्र पाठ्यक्रम पूर्ण करने का माध्यम नहीं मानती। इसमें परीक्षा उत्तीर्ण करने वाली गतिविधियों से अधिक उसके ज्ञानार्जन के व्यावहारिक उद्देश्य पर बल दिया गया है। इसके जरिए 21वीं सदी के आधुनिक भारत के निर्माण की नींव रखने का कार्य प्रारंभ हो चुका है। यह नीति छात्र-छात्राओं के साथ ही समानांतर रूप से शिक्षक के प्रशिक्षण को भी महत्त्व देती है। इसके अंतर्गत एक ओर जहाँ मातृभाषा में पठन-पाठन को प्रोत्साहित किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर कौशल विकास के कार्यक्रमों को प्रारंभिक स्तर से ही पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया जा रहा है।

भारत का गौरवशाली इतिहास ज्ञान और मूल्यों से समृद्ध है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति छात्र-छात्राओं को भारतीयता का बोध कराते हुए मानवीय जीवन के विभिन्न पक्ष में अग्रसर रहने का संदेश देती है। इससे भारत एक ऐसी ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था बनेगा, जो संपूर्ण विश्व को समावेशी विकास की ओर लेकर जाएगा।

धर्मेंद्र प्रधान
केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास
एवं उद्यमिता मंत्री, भारत सरकार

भारत की शिक्षा प्रणाली देश की प्राचीन परंपराओं को संरक्षित कर रही है, वहीं दूसरी ओर राष्ट्र विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से प्रगति कर रहा है। प्रधानमंत्री ने शिक्षा क्षेत्र में योगदान देने वालों को अब तक हुई प्रगति के लिए बधाई दी। यह उल्लेख करते हुए कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति की तीसरी वर्षगाँठ है, प्रधानमंत्री ने बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों और शिक्षकों को इसे एक मिशन के रूप में लेने और असीम प्रगति की दिशा में योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी की चर्चा करते हुए, प्रधानमंत्री ने कौशल और शिक्षा एवं नवोन्मेषी तकनीकों के प्रदर्शन को रेखांकित किया। उन्होंने देश में शिक्षा और स्कूली शिक्षा के रूपांतरित होते रूप का उल्लेख किया, जहाँ छोटे बच्चे चुलबुले अनुभवों के माध्यम से सीख रहे हैं और उन्होंने इसके लिए आशावाद भी व्यक्त किया। उन्होंने अतिथियों से प्रदर्शनी का अवलोकन करने का भी आग्रह किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि युगांतरकारी परिवर्तनों में कुछ समय लगता है। एनईपी के उद्घाटन के समय कवर किए जाने वाले विशाल कैनवास का स्मरण करते हुए, प्रधानमंत्री ने सभी हितधारकों के समर्पण और नई अवधारणाओं को अपनाने की इच्छा की सराहना की। उन्होंने कहा कि एनईपी में पारंपरिक ज्ञान और भविष्य की प्रौद्योगिकियों को समान महत्त्व दिया गया है। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा में नए पाठ्यक्रम, क्षेत्रीय भाषाओं

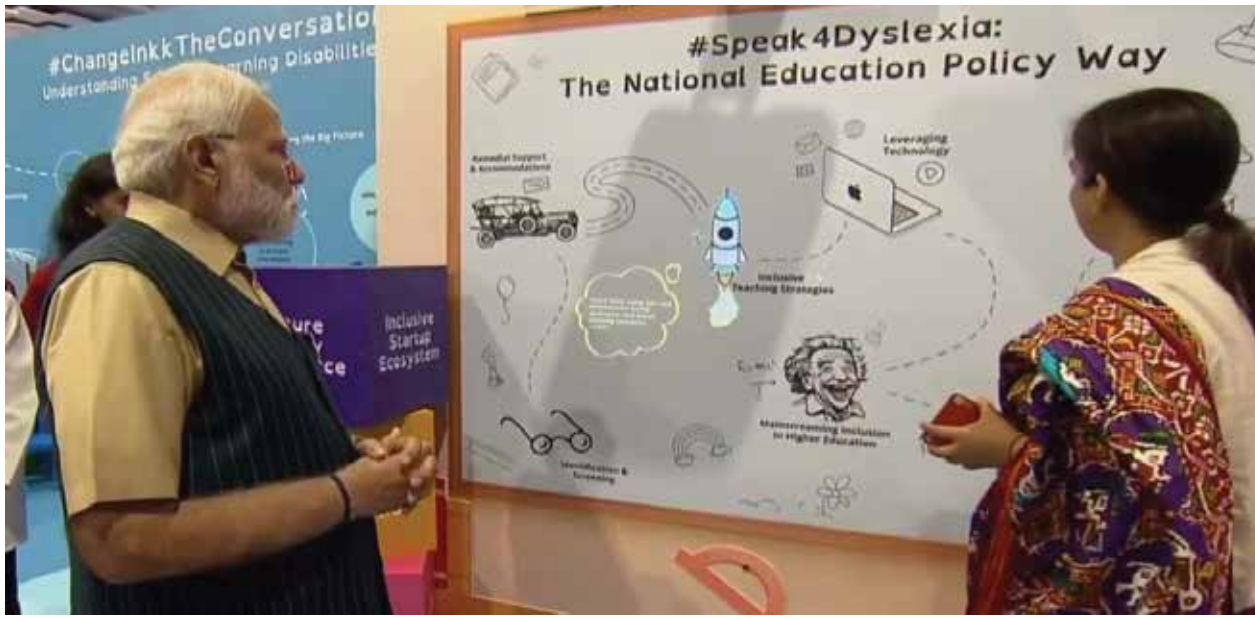

में पुस्तकों, उच्च शिक्षा के लिए और देश में अनुसंधान इकोसिस्टम को सुदृढ़ बनाने के लिए शिक्षा की दुनिया के हितधारकों की कड़ी मेहनत का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि छात्र अब समझते हैं कि 10+2 प्रणाली के स्थान पर अब 5+3+3+4 प्रणाली प्रचलन में है। पूरे देश में एकरूपता लाते हुए 3 साल की उम्र से शिक्षा आरंभ हो जाएगी। उन्होंने यह भी बताया कि मंत्रिमंडल ने संसद में राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन विधेयक पेश करने को मंजूरी दे दी है। एनईपी के तहत राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा शीघ्र ही सामने आएगा। 3-8 साल के छात्रों के लिए रूपरेखा तैयार है। पूरे देश में एक समान पाठ्यक्रम होगा और एनसीईआरटी इसके लिए नए पाठ्यक्रम की पुस्तकें तैयार कर रहा है। प्रधानमंत्री ने बताया कि क्षेत्रीय भाषाओं में दी जा रही शिक्षा के परिणामस्वरूप 22 विभिन्न भाषाओं में कक्षा 3 से 12 के लिए लगभग 130 विभिन्न विषयों की नई पुस्तकें आ रही हैं।

प्रदेश में 2025 तक लागू कर देंगे राष्ट्रीय शिक्षा नीति

अब तक की शिक्षा नीति 'वॉट टु थिंक' पर आधारित थी, लेकिन नई शिक्षा नीति में 'हाउ टु थिंक' पर बल दिया जाएगा। 21वीं सदी के भारत से पूरी दुनिया को बहुत अपेक्षाएँ हैं। भारत में सामर्थ्य है कि वह टैलेंट और टेक्नोलॉजी का समाधान पूरी दुनिया को दे सकता है, नई शिक्षा नीति इस जिम्मेदारी को भी प्रतिपादित करती है।

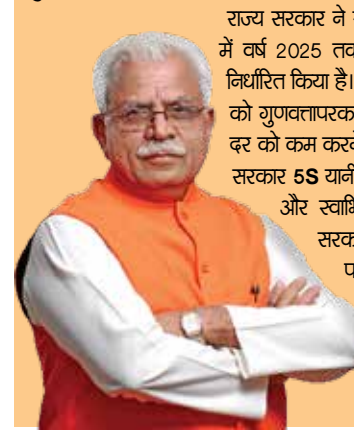

राज्य सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को प्रदेश में वर्ष 2025 तक पूरी तरह लागू करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। राज्य सरकार प्रदेश में प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने तथा ड्रॉप आउट दर को कम करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। राज्य सरकार **5S** यानी शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, स्वावलंबन और स्वाभिमान के लिए कार्य कर रही है। सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में कई आमूलचूल परिवर्तन किए हैं। आज हरियाणा शिक्षा क्षेत्र में कहीं भी पीछे नहीं है।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

प्रधानमंत्री ने कहा कि किसी भी छात्र के साथ सबसे बड़ा अन्याय यह है कि उसकी क्षमता के बजाय उसकी भाषा के आधार पर उसका आकलन किया जाए। प्रधानमंत्री ने कहा 'मातृभाषा में शिक्षा भारत में छात्रों के लिए न्याय के एक नए रूप की शुरुआत कर रही है। यह सामाजिक न्याय की दिशा में भी एक बहुत ही उल्लेखनीय कदम है।' विश्व में भाषाओं की अधिकता और उनके महत्त्व को देखते हुए, प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि विश्व के कई विकसित देशों को उनकी स्थानीय भाषा के कारण बढ़त मिली है। प्रधानमंत्री ने यूरोप का उदाहरण देते हुए कहा कि ज्यादातर देश अपनी मूल भाषाओं का उपयोग करते हैं। उन्होंने अफसोस जताया कि भले ही भारत में स्थापित भाषाओं का एक शृंखला समूह है, लेकिन उन्हें पिछड़ेपन के संकेत के रूप में प्रस्तुत किया गया था और जो अंग्रेजी नहीं बोल सकते थे, उनकी उपेक्षा की गई थी और उनकी प्रतिभा को

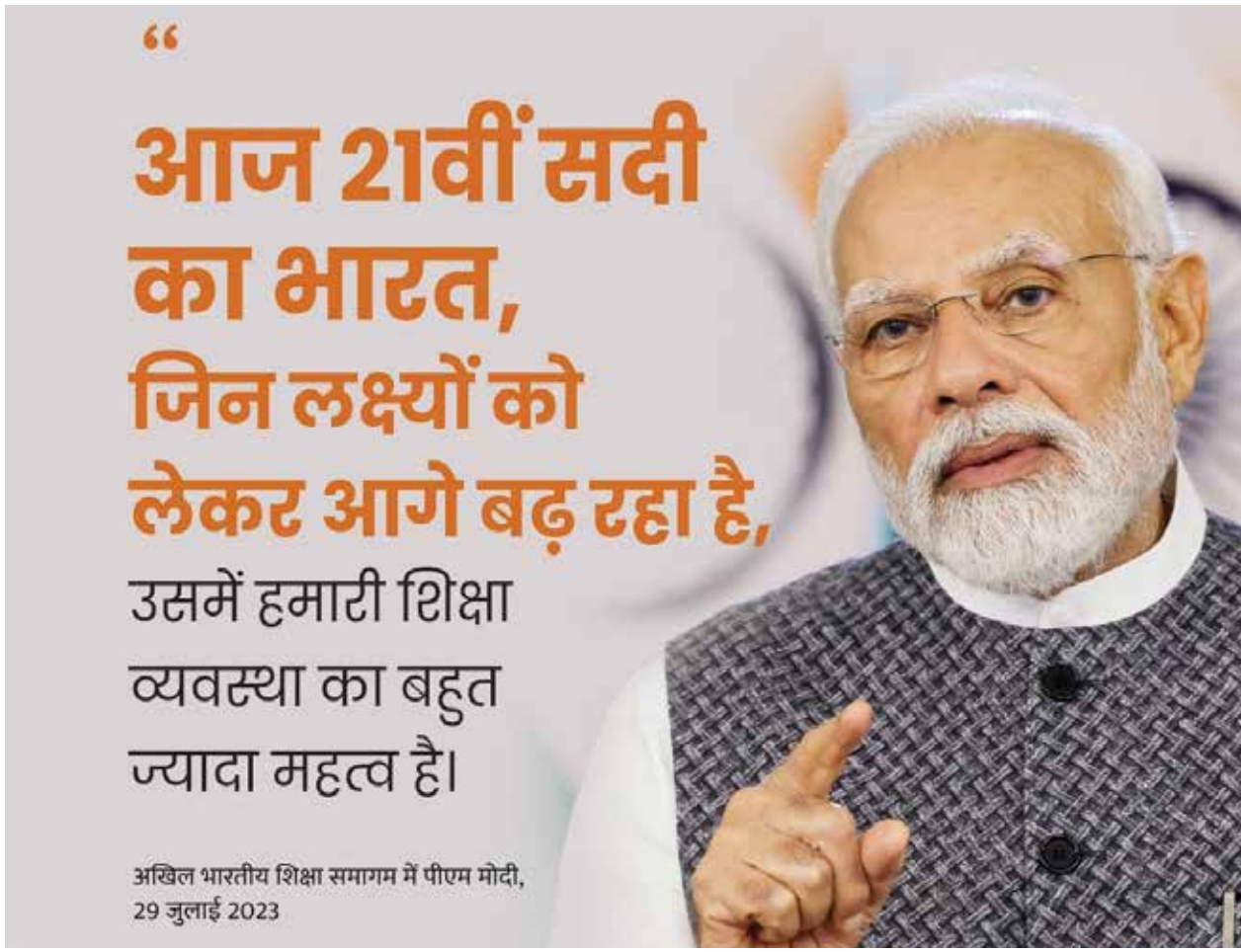

पहचान नहीं मिली थी। प्रधानमंत्री ने कहा कि इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित हुए। उन्होंने जोर देकर कहा कि देश ने अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्भव के साथ इस विचार से किनारा करना शुरू कर दिया है। श्री मोदी ने कहा 'संयुक्त राष्ट्र में भी मैं भारतीय भाषा में ही बोलता हूँ।'

प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि सामाजिक विज्ञान से लेकर इंजीनियरिंग तक के विषय अब भारतीय भाषाओं में पढ़ाए जाएँगे। श्री मोदी ने कहा, जब छात्र एक भाषा में विश्वस्त है, तो उसका कौशल और प्रतिभा बिना किसी प्रतिबंध के उभर कर सामने आती है। उन्होंने यह भी कहा कि जो लोग अपने स्वार्थ के लिए भाषा का राजनीतिकरण करने की कोशिश करते हैं, उन्हें अब अपनी दुकानें बंद करनी होंगी। उन्होंने कहा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश की हर भाषा को उचित सम्मान और श्रेय देगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि हमें अमृत काल के आगामी 25 वर्षों में एक ऊर्जावान नई पीढ़ी तैयार करनी है। गुलामी की मानसिकता से मुक्त, नवाचारों के लिए उत्सुक, विज्ञान से लेकर खेल तक के क्षेत्र में परचम लहराने को तैयार, 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप खुद को हुनरमंद बनाने की इच्छुक, कर्तव्य की भावना से भरी हुई पीढ़ी। उन्होंने कहा, एनईपी इसमें बड़ी भूमिका निभाएगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के विभिन्न मापदंडों में से भारत का बड़ा प्रयास समानता का है। उन्होंने कहा, एनईपी की प्राथमिकता है कि भारत के प्रत्येक युवा को समान शिक्षा और शिक्षा के समान अवसर मिलें। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि यह स्कूल खोलने तक सीमित नहीं है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि शिक्षा के

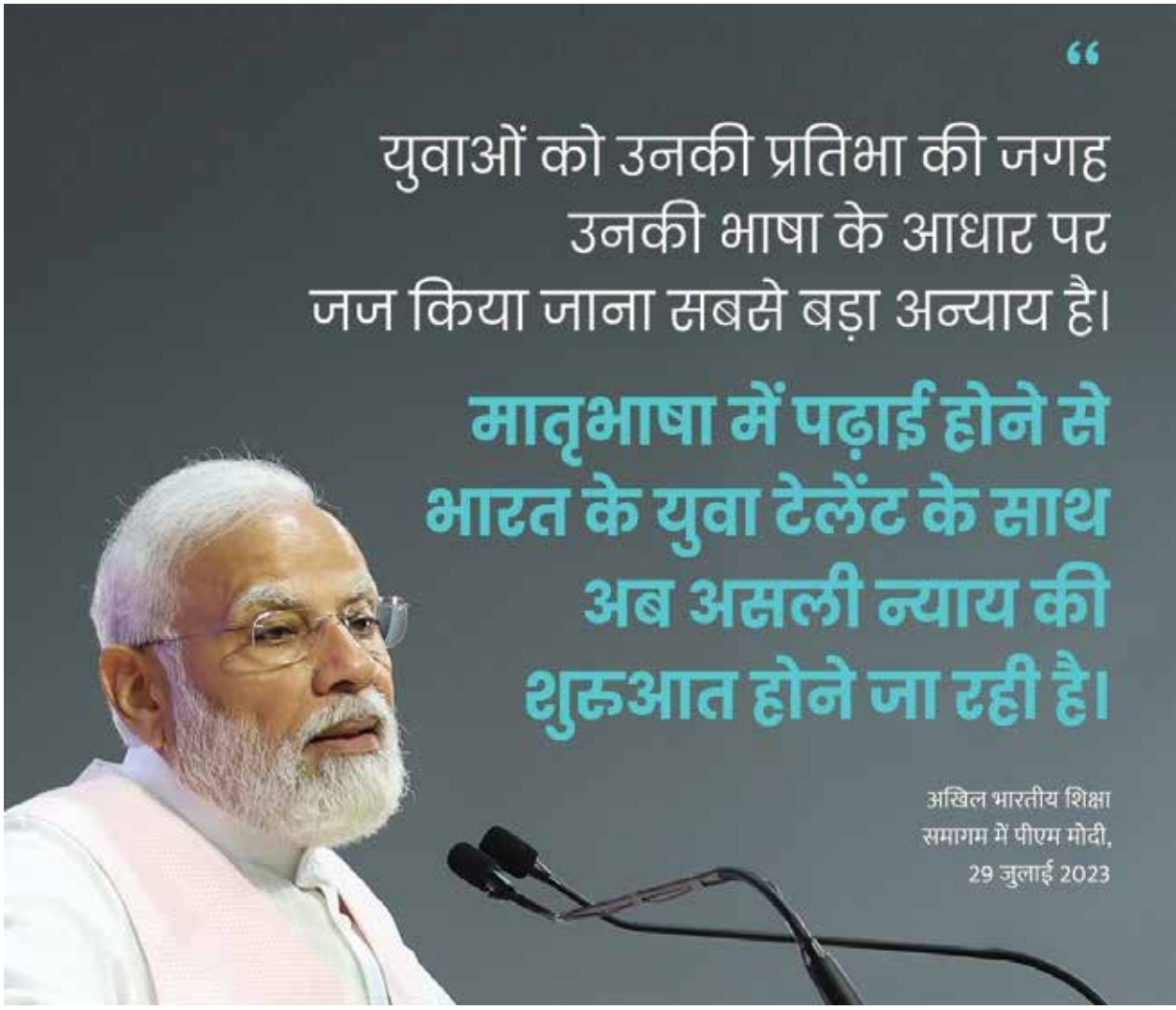

साथ-साथ संसाधनों में भी समानता लायी जानी चाहिए। उन्होंने कहा, इसका मतलब है कि हर बच्चे को पसंद और क्षमता के अनुसार विकल्प मिलना चाहिए। उन्होंने कहा, शिक्षा में समानता का मतलब है कि कोई भी बच्चा स्थान, वर्ग, क्षेत्र के कारण शिक्षा से वंचित न रहे। उन्होंने बताया कि पीएम श्री योजना के अंतर्गत हजारों स्कूलों को अपग्रेड किया जा रहा है। उन्होंने कहा, 5जी के युग में ये आधुनिक स्कूल आधुनिक शिक्षा का माध्यम होंगे। उन्होंने उल्लेख करते हुए बताया कि आदिवासी गाँवों में इंटरनेट सुविधाएँ, एकलव्य विद्यालयों और दीक्षा, स्वयं और स्वयंप्रभा जैसे माध्यमों से छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा, अब, भारत में शिक्षा के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी को तेजी से पूरा किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री ने व्यावसायिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा के साथ एकीकृत करने के कदमों और शिक्षा को अधिक रोचक और इंटरैक्टिव बनाने के तरीकों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि लैब और प्रैक्टिकल की सुविधा पहले कुछ मुट्ठी भर स्कूलों तक ही सीमित थी। प्रधानमंत्री ने अटल टिंकरिंग लैब्स पर प्रकाश डाला, जहाँ 75 लाख से अधिक छात्र विज्ञान और नवाचार के बारे में सीख रहे हैं। उन्होंने कहा विज्ञान स्वयं को सभी के लिए सरल बना रहा है। ये युवा वैज्ञानिक ही हैं जो महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं का नेतृत्व करके देश के भविष्य को आकार देंगे और भारत को दुनिया के अनुसंधान केंद्र

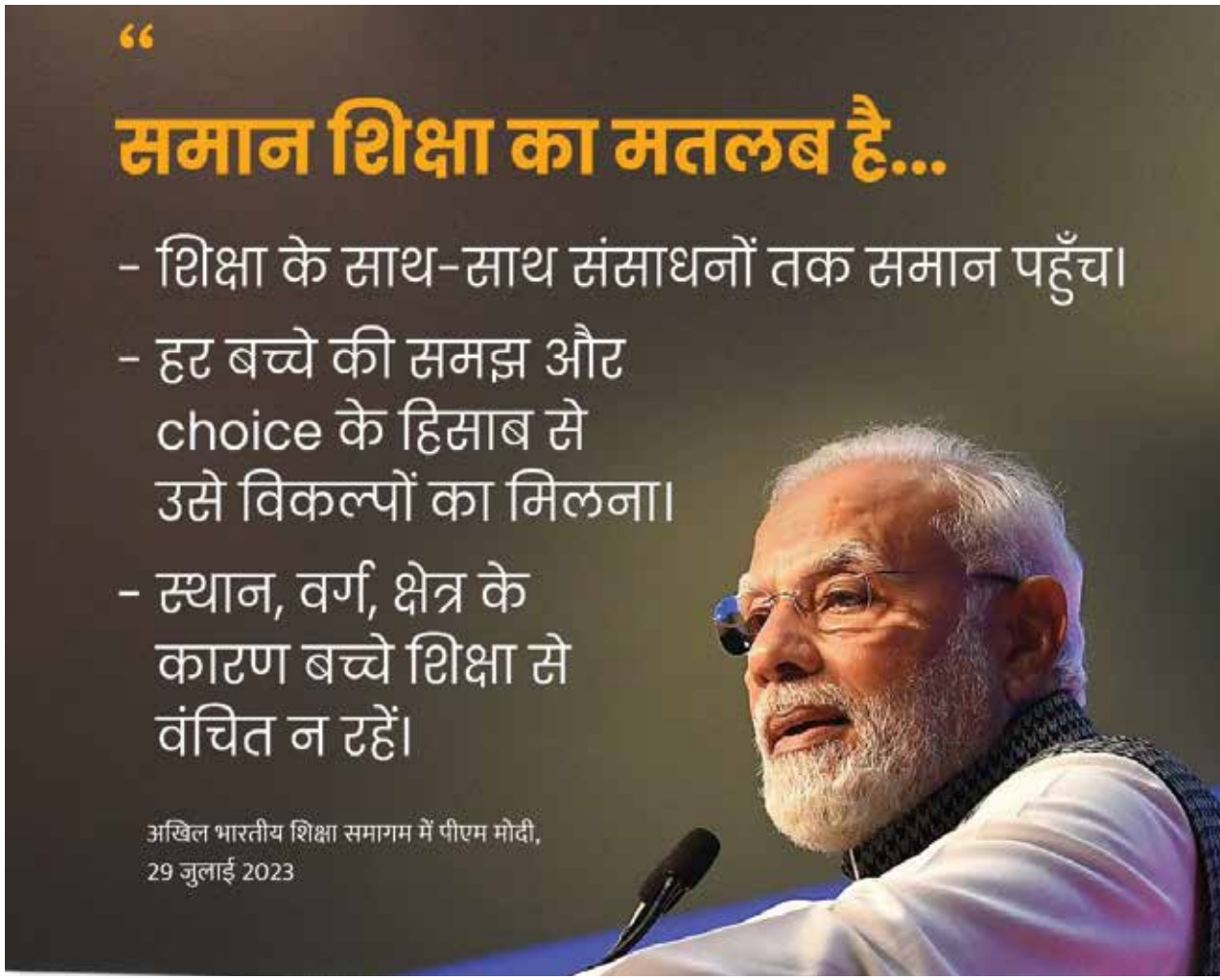

में बदल देंगे।

श्री मोदी ने कहा, किसी भी सुधार के लिए साहस की आवश्यकता होती है, और साहस की उपस्थिति नई संभावनाओं को जन्म देती है, उन्होंने रेखांकित किया कि दुनिया भारत को नई संभावनाओं की नर्सरी के रूप में देख रही है। प्रधानमंत्री ने सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी और स्पेस टेक का उदाहरण देते हुए कहा कि भारत की क्षमता से मुकाबला

प्रदेश के विद्यालयों में देखा गया पीएम का लाइव कार्यक्रम

विभाग की ओर से आदेश दिये गये थे कि सभी विद्यालय अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन कार्यक्रम के सीधे प्रसारण से जुड़ें। उसकी अनुपालना में प्रदेश भर के शिक्षकों व विद्यार्थियों ने माननीय प्रधानमंत्री के उद्बोधन को सुना।

राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सराय ख्वाजा फरीदाबाद में प्राचार्य रवींद्र कुमार मनचंदा की अध्यक्षता में राष्ट्रीय शिक्षा नीति दिवस पर प्रधानमंत्री के लाइव प्रसारण को विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने देखा। प्राचार्य मनचंदा ने बताया कि देश की शिक्षा-व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तनों के लिए-2020 में नई शिक्षा नीति लाई गई है, जिसके तीन वर्ष पूरे हो गए हैं। इस अवसर पर पीएम मोदी जी ने दिल्ली के प्रगति मैदान में अखिल भारतीय शिक्षा समागम का उद्घाटन किया। प्राचार्य ने सभी विद्यार्थियों और अध्यापकों से आह्वान किया कि वे सभी नई शिक्षा नीति के सभी बिंदुओं का विस्तृत अध्ययन करें, ताकि सरकार के निर्देशानुसार नई शिक्षा नीति के क्रियान्वन को गति मिले और अधिक से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हों।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच बढ़ाने के लिए की गईं अनेक पहलें

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। देश-प्रदेश उन्नति की ओर अग्रसर हो, इसके लिए हर बच्चे तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच जरूरी है। इसी उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा लाई गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के निर्धारित लक्ष्यों को लेकर हरियाणा सरकार प्रतिबद्ध है। माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल के नेतृत्व में हरियाणा इन सभी लक्ष्यों को 2025 तक प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है।

राज्य ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मुताबिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच बढ़ाने के लिए कई पहलें की हैं। इसमें मुख्यमंत्री परिवहन योजना, JEE, NEET, तथा NDA के लिए मुफ्त कोचिंग, लर्निंग एनहांसमेंट प्रोग्राम इत्यादि शामिल हैं। राज्य ने डिजिटल पहलों पर विशेष ध्यान देते हुए कक्षा दसवीं से बारहवीं के बच्चों एवं उनके शिक्षकों को ई-अधिगम के तहत पर्सनलाइज्ड अडॉप्टिव लर्निंग मॉड्यूल से सुसज्जित मुफ्त टेबलेट एवं डाटा प्रदान किया है। यहाँ तक कि प्राथमिक शिक्षकों को भी इस टेबलेट स्कीम से जोड़ा गया है ।

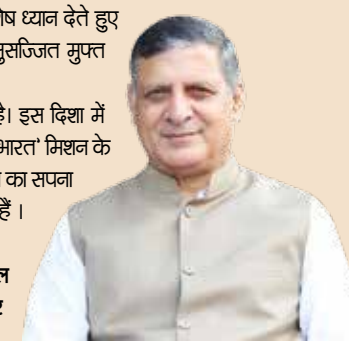

इसके अलावा नीति में विशेष बल प्राथमिक शिक्षा, खास तौर पर बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान पर दिया गया है। इस दिशा में गंभीरता से काम करते हुए हरियाणा सरकार भी इसे तत्परता से लागू कर रही है। केंद्र सरकार द्वारा आरम्भ किये गए 'निपुण भारत' मिशन के अंतर्गत हरियाणा में 'निपुण हरियाणा' मिशन का संचालन हो रहा है। प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए गए 'हर बच्चा निपुण' के जयघोष का सपना साकार करने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं, जिनमें नवीन पठन-पाठन सामग्री, शिक्षक -प्रशिक्षण व मॉनिटरिंग प्रमुख हैं ।

आशा करता हूँ कि हम सभी एकजुट हो कर राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सभी उद्देश्यों को पूरा करने में सफल होंगे ।

कँवर पाल
स्कूल शिक्षा मंत्री, हरियाणा सरकार

करना आसान नहीं है। रक्षा प्रौद्योगिकी के बारे में बोलते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत का कम लागत और सर्वोत्तम गुणवत्ता मॉडल हिट होना निश्चित है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत की औद्योगिक प्रतिष्ठा और स्टार्टअप ग्रोथ इकोसिस्टम में वृद्धि के साथ दुनिया में भारत की शिक्षा प्रणाली के प्रति सम्मान काफी बढ़ा है। उन्होंने कहा कि सभी वैश्विक रैंकिंग में भारतीय संस्थानों की संख्या बढ़ रही है और ज़ंज़ीबार व अबू धाबी में दो आईआईटी परिसर खुलने की जानकारी दी। उन्होंने कहा, कई अन्य देश भी हमसे अपने यहाँ आईआईटी परिसर खोलने का आग्रह कर रहे हैं। उन्होंने शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र में आ रहे सकारात्मक बदलावों के कारण भारत में अपने परिसर खोलने के इच्छुक कई वैश्विक विश्वविद्यालयों के बारे में भी बताया। उन्होंने जानकारी दी कि ऑस्ट्रेलिया के दो विश्वविद्यालय गुजरात की गिफ्ट सिटी में अपने कैम्पस खोलने वाले हैं। श्री मोदी ने शिक्षण संस्थानों को लगातार मज़बूत करने और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करने की दिशा में काम करने पर जोर दिया। उन्होंने भारत के संस्थानों, विश्वविद्यालयों, स्कूलों और कॉलेजों को इस क्रांति का केंद्र बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर ज़ोर दिया कि सक्षम युवाओं का निर्माण एक मज़बूत राष्ट्र के निर्माण की सबसे बड़ी गारंटी है और माता-पिता और शिक्षक इसमें प्रमुख भूमिका निभाते हैं। उन्होंने शिक्षकों और अभिभावकों से छात्रों को आत्मविश्वासपूर्ण जिज्ञासा और कल्पना की उड़ानों के लिए तैयार करने की अपील की। उन्होंने कहा हमें भविष्य पर नज़र रखनी होगी और भविष्यवादी मानसिकता के साथ सोचना होगा। हमें बच्चों को किताबों के दबाव से मुक्त करना होगा।

प्रधानमंत्री ने इस जिम्मेदारी के बारे में बात की जो एक मजबूत भारत में बढ़ती वैश्विक जिज्ञासा हम पर डालती है। उन्होंने छात्रों को योग, आयुर्वेद, कला और साहित्य के महत्त्व से परिचित कराने की बात याद दिलाई। इस अवसर पर अन्य लोगों के अलावा केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता मंत्री धर्मेंद्र प्रधान भी उपस्थित थे।

पृष्ठभूमि-

प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण से प्रेरित होकर, युवाओं को तैयार करने और उन्हें अमृत काल में देश का नेतृत्व करने के लिए तैयार करने के उद्देश्य से एनईपी-2020 लॉन्च की गई थी। इसका उद्देश्य उन्हें बुनियादी मानवीय मूल्यों पर आधारित रखते हुए भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है। अपने कार्यान्वयन के तीन वर्षों के दौरान इस नीति से स्कूल, उच्च और कौशल शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन आया है। 29 और 30 जुलाई को आयोजित होने वाले दो दिवसीय कार्यक्रम शिक्षाविदों, क्षेत्र विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं, उद्योग प्रतिनिधियों, शिक्षकों और स्कूलों, उच्च शिक्षा और कौशल संस्थानों के छात्रों और अन्य लोगों को अपनी अंतर्दृष्टि, सफलता साझा करने और

एनईपी-2020 को लागू करने में कहानियाँ और सर्वोत्तम अभ्यास और इसे और आगे ले जाने के लिए रणनीतियाँ तैयार करने के लिए एक मंच प्रदान किया।

अखिल भारतीय शिक्षा समागम में सोलह सत्र शामिल थे, जिनमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शासन तक पहुँच, न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा, सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह के मुद्दे, राष्ट्रीय संस्थान रैंकिंग फ्रेमवर्क, भारतीय ज्ञान प्रणाली, शिक्षा का अंतरराष्ट्रीयकरण सहित विषयों पर चर्चा हुई।

इस कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने पीएम श्री योजना के अंतर्गत फंड की पहली किश्त जारी की। ये स्कूल छात्रों का विकास इस तरह से करेंगे कि वे राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की परिकल्पना के अनुसार एक समतापूर्ण, समावेशी और बहुलवादी समाज के निर्माण में संलग्न, उत्पादक और योगदान देने वाले नागरिक बनें। प्रधानमंत्री ने 12 भारतीय भाषाओं में अनूदित शिक्षा और कौशल पाठ्यक्रम पुस्तकों का भी विमोचन किया।

drpradeeprathore@gmail.com

राष्ट्रीय शिक्षा नीति : पुरातन तथा नवीन भारत का समावेश

प्रमोद कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 को लागू हुये तीन वर्ष पूरे हो चुके हैं। जुलाई-2020 में जब माननीय प्रधानमंत्री जी ने इसे राष्ट्र को समर्पित किया था तो उस समय बहुत से पहलू ऐसे थे जिनके क्रियान्वयन, योजना निर्माण, बजट तथा प्रबन्धन को लेकर अनेक प्रश्न चिह्न थे, लेकिन तीन वर्षों में बहुत से कार्य हुये हैं। आज यदि प्रदेश स्तर पर देखा जाए तो बहुत ही शानदार काम हुआ है, जिसमें पूर्व प्राथमिक शिक्षा यानी ईसीसीई का आरम्भ होना भी शामिल है। राज्य में आज बाल वाटिका-3 की कक्षायें विधिवत आरम्भ हो गई हैं जिससे नर्सरी कक्षा आज औपचारिक शिक्षा का भाग है। इन्हें अलग से कक्ष, फर्नीचर, बच्चों की पुस्तकें, इनके लिये अध्यापक, समय-सारणी तथा निःशुल्क हकदारियाँ जैसे मध्याह्न भोजन, वर्दी आदि उपलब्ध हो रहे हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (NCFFS) का आना या NCFSE के ड्राफ्ट का आना एक सुखद अनुभव करवा रहा है। यदि देखा जाए तो 1968 से कोठारी साहब कमेटी जिसे स्वतंत्र भारत की पहली शिक्षा नीति बनाने का श्रेय भी दिया जाता है, के द्वारा की गई सिफारिशों को भी इसमें शामिल किया गया जिसे 86/92 की पॉलिसी में आगे बढ़ाया गया। अन्ततः एक लम्बी यात्रा के बाद आज यह धरातल पर उतरती नज़र आ रही है। श्री यशपाल साहब से लेकर श्री कृष्ण कुमार तक जिस भयमुक्त वातावरण, बाल मित्रवत, बाल केन्द्रित, गतिविधि आधारित, खेल-खेल में दी जाने वाली शिक्षा की सिफारिश करते थे, वह अब धीरे-धीरे कक्षाओं में नज़र आ रही है। जिस मातृभाषा में शिक्षा देने की बात पाँच दशकों से हो रही है वह अब नज़र आने लगी है।

प्रधानमंत्री जी ने प्रगति मैदान से राष्ट्र के नाम जो सन्देश दिया उसमें कहा कि भारत को नवाचार और अनुसंधान का केन्द्र बनाना है तथा 21वीं सदी का भारत जिन लक्ष्यों को लेकर आगे बढ़ रहा है, उनमें एनईपी का बड़ा योगदान होगा। विद्या के लिए विमर्श और शिक्षा के लिये संवाद जरूरी है। प्रगति मैदान के जिस नये बने भारत मंडपम् से यह सन्देश दिया गया उसके उद्घाटन के उपरान्त पहला कार्यक्रम भी शिक्षा का ही था। यह सन्देश अपने आप में बहुत बड़ा है, जो भारत विश्व गुरु बनाने के सपने को साकार करने के प्रमाण के रूप में है। यह सत्य है कि युग बदलने वाले परिवर्तन समय लेते हैं, लेकिन अच्छी बात यह है कि वह समय आ गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति समावेश है पुरातन भारत तथा नवीन भारत का तथा यह ट्रेडिशनल नॉलेज तथा फ्यूचरिस्टिक टेक्नोलॉजी का समावेश है। भारतीय भाषाओं में अब कार्य हो रहा है तथा 22 भाषाओं में पुस्तकें उपलब्ध हुई हैं। एनसीईआरटी जैसा संस्थान 130 विषयों पर स्कूली पुस्तकें बना रहा है। अब सोशल साइंस से इंजीनियरिंग तक की पढ़ाई भारतीय भाषाओं में होने का सपना साकार हुआ है। आज का विद्यार्थी जो कल का मानव संसाधन है, जिसके दम पर, जिसके बल पर भारत विश्व की तीसरी आर्थिक शक्ति बनने की ओर बढ़ेगा, उसके लिये यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति काम करेगी। इस

उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुँच

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 भारत को सभी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुँच के साथ एक ज्ञान-आधारित समाज बनाने की एक परिवर्तनकारी पहल है। यह नीति देश के भविष्य को सशक्त बनाते हुए शैक्षिक परिदृश्य को नया आकार देने की अपार क्षमता रखती है। हरियाणा एनईपी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है और उसने नीति को उसकी मूल भावना के अनुरूप लागू करने का संकल्प लिया है। संसाधनों का इष्टतम उपयोग करने और प्रभावी प्रशासन को सक्षम करने के लिए, स्कूल क्लस्टर/कॉम्प्लेक्स बनाए गए हैं। नवीन शिक्षण विधियों को विकसित करने और बच्चों के लिए आनंदमय, गतिविधि-आधारित शिक्षण के लिए शिक्षकों के निरंतर व्यावसायिक विकास को सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। ई-अधिगम कार्यक्रम सहित कई डिजिटल पहलें लागू की गई हैं, जिनके तहत लगभग 5 लाख छात्रों को मिश्रित शिक्षा को सक्षम और प्रोत्साहित करने के लिए व्यक्तिगत अनुकूली शिक्षण मॉड्यूल के साथ टैबलेट प्राप्त हुए हैं। हाल ही में लॉन्च की गई फाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा को एनईपी-2020 के कार्यान्वयन को और अधिक सुव्यवस्थित करने के लिए विकसित किया गया है और यह निपुण हरियाणा मिशन को भी गति प्रदान करेगा। इस नए ढाँचे के प्रमुख घटक- फोर ब्लॉक एप्रोच को हरियाणा के छात्रों के मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक पाठ्यक्रम में पहले ही आरंभ किया जा चुका है। राज्य प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा में सुधार लाने पर भी सक्रिय रूप से काम कर रहा है, हाल ही में अपने सभी प्राथमिक विद्यालयों में बालवाटिका-3 शुरू की है। हम सभी मिलकर एनईपी-2020 के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

राजेश खुल्लर
अतिरिक्त मुख्य सचिव
स्कूल शिक्षा विभाग, हरियाणा

पूरे कार्यक्रम में विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों पर संगोष्ठियाँ, चर्चा/विमर्श कार्यक्रम भी हुए, जिनमें उच्चतर शिक्षा क्षेत्र में गुणवत्तापरक शिक्षा तक पहुँच या समावेशी शिक्षा, नवाचार तथा आन्त्रप्रन्योरशिप, कौशल रोज़गार शिक्षा, प्रशिक्षण तथा भारतीय ज्ञान व्यवस्था एवं संस्थानों तथा एससीईआरटी का शक्तिकरण आदि शामिल थे।

इस कड़ी में यहाँ उल्लेख करना चाहूँगा कि प्रदेश के स्कूल शिक्षा के अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय को एक कार्यक्रम की अध्यक्षता का दायित्व सौंपा गया था, मुझे भी उसमें भाग लेने का अवसर मिला। अतिरिक्त मुख्य सचिव, स्कूल शिक्षा, श्री राजेश खुल्लर को जानने वाले इस बात से अच्छे से वाकिफ हैं कि शिक्षा जैसे विषय पर उनकी अधिकारिता अद्भुत स्तर की है तथा उन्हें इस विषय पर विमर्श करते जब आप देखते या सुनते हैं तो उनमें कभी टैगोर का दर्शन-शास्त्र नजर आता है तो कभी मारीया माण्टेसरी की पूरी पद्धति, कभी गीजूभाई बधेका के शिक्षण सिद्धांत, कभी जॉन हाल्ट की प्रणाली, ब्लूम से लेकर किण्डर गार्डन के जनक फ्रोबेल या फिर सूलीवान या फिर सर्वपल्ली राधाकृष्णन या फिर आइंसटाइन साहब सबकी झलक नज़र आती है।

एनईपी-2020 के विमर्श कार्यक्रम के आरम्भ में जब महोदय ने अपना वक्तव्य आरम्भ किया तो उसकी शुरुआत यजुर्वेद की ऋचा से की गई। उस ऋचा की जिस व्याख्या से पूरे सदन को अवगत, परिचित करवाया वह सबके लिये प्रबोधन, जागरण या जागृति के समान था। वह ऋचा निम्नानुसार है-

ॐ सह नाववतु
सह नौ भुनक्तु
सह वीर्य करवावहै
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै

अब पूरी शिक्षा जो गुरु और शिष्य, अध्यापक और विद्यार्थी (Teacher and Taught) उस्ताद एवं शागिर्द के चारों और घूमती है। इस ऋचा की पहली पंक्ति में गुरु कामना करता है कि परमात्मा हम दोनों अर्थात् 'गुरु और शिष्य' की साथ-साथ रक्षा करे। ऋचा का प्रथम पद यह बताता है कि दोनों का साथ-साथ होना कितना आवश्यक है। उन्हें समुचित शैक्षणिक वातावरण मिलना जरूरी है, बिना किसी व्यवधान के चाहे कक्षा-कक्ष हो या पुस्तकालय या प्रयोगशाला या कोई अन्य शिक्षण का स्थान उसमें कोई खतरा न हो, कोई बाधा न हो, कोई प्रदूषण न हो ताकि गुरु का एक-एक सन्देश, निर्देश, आदेश, परामर्श सीधे विद्यार्थी तक पहुँचे। मन का रिश्ता बने, जहाँ गुरु जो कह रहा है केवल उतना ही न सुने उससे आगे का भी विद्यार्थी समझे तथा इसी प्रकार विद्यार्थी के मन की बात बिना बनाये भी गुरु तक पहुँचे सीधे बिल्कुल दिल में। कक्षा-कक्ष का वातावरण बाल मित्रवत तथा बाल केन्द्रित जब होता है तो अध्यापक-छात्र सम्बन्ध प्रगाढ़ होने से कोई रोक ही नहीं सकता। जब अध्यापन गतिविधि आधारित होगा, प्रोजेक्ट आधारित होगा, खुशी और आनन्द भरा होगा, जॉयफुल होगा तो इन दोनों की रक्षा होगी तथा दोनों का कल्याण होगा। जब कक्षा-कक्ष के अन्दर तथा बाहर भयमुक्त वातावरण में शिक्षण होगा, जहाँ विद्यार्थी न केवल प्रश्न पूछने को स्वतंत्र हों अपितु शिक्षक के सामने प्रश्न खड़े करने के लिए भी स्वतंत्र हों, जिसमें समस्या का समाधान मिलकर निकालें तथा छात्र और अध्यापक मिलकर खोज करें। दोनों साथ-साथ चलें एक पथ पर तथा एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए और मन वचन व कर्म से चलें तब 'सह नाववतु' होगा।

इसी कड़ी में महोदय ने कहा कि पूरी शिक्षा व्यवस्था में 'सह नौ भुनक्तु ' पद यह कहता है कि गुरु और शिष्य दोनों मिलकर एक साथ पोषित हों (both nourishment) एक साथ हों, दोनों पुष्ट हों। स्वस्थ विकास

सभी के लिए समावेशी व उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा

स्कूल शिक्षा विभाग, हरियाणा एक सुरक्षित और बौद्धिक रूप से प्रेरक वातावरण वाले स्कूलों का निर्माण करने का प्रयास कर रहा है, जहाँ प्रत्येक छात्र गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ग्रहण करे। इसके लिए विभाग ने स्कूलों में सीखने की गुणवत्ता में सुधार के लिए कई सफल प्रयास किए हैं। विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी माध्यम में शिक्षा प्रदान करने के लिए अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त 139 वरिष्ठ माध्यमिक संस्कृति मॉडल स्कूल शुरू किए गए हैं। इसके अलावा 1418 प्राथमिक विद्यालयों को बैग-मुक्त अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों में अपग्रेड किया गया है। राज्य ने प्रारंभिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हुए 1135 प्ले-वे स्कूल भी जोड़े हैं।

राज्य ने ग्रेड 1-3 में छात्रों की मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक कौशल को मज़बूत करने के लिए निपुण हरियाणा मिशन शुरू किया है। राज्य छात्रों के लिए तनावमुक्त शिक्षण वातावरण सुनिश्चित करने के लिए शैक्षणिक और शासन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण प्रयास कर रहा है। छात्रों के लिए खेलपूर्ण सीखने का माहौल बनाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा समर्थित नई शैक्षणिक सामग्री विकसित की गई है।

तकनीक-आधारित निगरानी तंत्र के साथ जिला और ब्लॉक स्तर की समीक्षा मिशन के उचित कार्यान्वयन को सुनिश्चित कर रही है। मुझे विश्वास है कि हरियाणा निर्धारित समय-सीमा के भीतर एनईपी परिणाम हासिल कर लेगा। मैं इस परिवर्तनकारी यात्रा में शामिल सभी लोगों को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

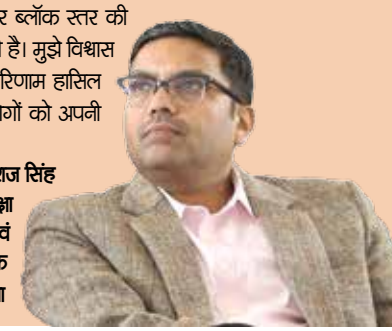

डॉ. अंशज सिंह
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक
स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद, हरियाणा

हो, वृद्धि हो, हे प्रभु! हम दोनों को एक साथ विद्या के फल का भोग करायें। इस सुन्दर वाक्य में जहाँ गुरु और शिष्य मिलकर ज्ञान की जानकारी के कौशल के ग्रहण की बात कर रहे हैं, वहीं उस रसास्वादन की बात कर रहे हैं जो सीखने पर प्राप्त होता है, गुण ग्रहण हो जाने पर, दक्षता प्राप्त होने पर, कौशल ग्रहण होने पर होता है बिल्कुल वैसे जैसे पहली बार साइकिल चलाना आ जाने पर गुदगुदी होती है, जिसमें आनन्द व सफलता के सवाद का मिश्रण होता है। जैसे पहली बार स्वतंत्र रूप से तैरना सीख जाने पर होता है। वह आनन्द, वह स्वाद बिल्कुल वैसे होता है, जैसे बच्चा पहली बार स्वतंत्र रूप से खड़ा होता है या पहला कदम भरता है। उस समय माता-पिता, बच्चे दोनों को आनन्द आता है।

इस पद में गुरु कह रहा है हे प्रभु! मैं और मेरे शिष्य, मेरी पूरी कक्षा तथा मेरा एक-एक विद्यार्थी 'सह नौ भुनक्तु' हो हम साथ-साथ ज्ञान से पोषित हों जिसमें वे मुझसे सीख रहे हैं मैं उनसे सीख रहा हूँ। हम मिलकर सीखें, एक साथ सीखें और एक साथ पोषित हों।

फिर इस ऋचा का तीसरा पद जिसमें पूरी शिक्षा व्यवस्था का मूल छिपा हुआ है, आज तक के जिनते भी शिक्षाविद् हुए हैं, पथ-प्रदर्शक, दार्शनिक या विचारक हुए हैं उन्होंने भी इससे बाहर कुछ नहीं लिखा और न ही अलग से बताया। भारतीय विचारक टैगोर, सावित्रीबाई फुले, विवेकानन्द, गांधी, अरबिन्दो, जिद्दू कृष्णमूर्ति या पाश्चात्य जगत् के जाने माने लोग, सबने मिलकर ऐसी ही बात को कहा है-'सह वीर्यं करवावहै' अर्थात् 'हम दोनों एक साथ मिलकर विद्या प्राप्ति का सामर्थ्य प्राप्त करें'। एक साथ मिलकर, साथ-साथ, साझेदारी में, बराबरी के साथ जुड़कर, इकट्ठे, छोटे-बड़े के भेद को भुलाकर। वाह! क्या बात है सब भेद समाप्त कर दिये न गुरु बड़ा न शिष्य छोटा, न गुरु ज्ञानी न शिष्य अनजान, न गुरु महत्त्वपूर्ण न शिष्य तुच्छ, वाह! न गुरु गुरु, न शिष्य लघु। वाह! अब यहाँ शिक्षा का पूरा तन्त्र जिसमें बीआरसी, सीआरसी, डीईओ, बीईओ सब के सब यहाँ संसाधन की भूमिका में हैं। वे शिक्षक के मददगार की भूमिका में रहें, आपूर्तिकर्ता की भूमिका में रहें, ताकि ये दोनों अध्यापक और विद्यार्थी मिलकर अथवा इनकी कक्षा मिलकर बिना बाधा के आगे बढ़ती रहे और वो भी एक साथ, बिना पिछड़े, बिना फेल हुये, बिना रुकावट के, बिना व्यवधान के ताकि "They make work conjointly withgreat energy" जिससे गहन एकाग्रता से अध्ययन का कार्य हो सके, शिक्षण हो सके तथा वह अधिगम में परिवर्तित हो सके।

अब देखिये, कितना सुन्दर पद है जिसमें कामना हो रही है, अध्यापक और विद्यार्थी के सम्बन्ध की, उसके आत्मीय रिश्ते की, एक दूसरे के प्रति आदर की, लगाव जुड़ाव की, समर्पण की, दायित्व की, ज़िम्मेदारी की, जवाबदेही की, जिसमें कहीं पर भी दण्ड की बात नहीं है। जब 'सह' होता है तो भेद नहीं होता, जब सह होता है तो छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच, गोरा-काला नहीं होता। सब बराबर, साथ चलेंगे।

हम चलेंगे साथ-साथ,
डाल हाथों में हाथ एक दिन,
मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन

जब साथ-साथ चलेंगे 'सह वीर्यं' गुरु शिष्य साथ है, कोई रेसिज़्म नहीं, न लिंगभेद, न जातीय, न क्षेत्रीय न धार्मिक, न रंगभेद कुछ नहीं बस 'सह वीर्यं' है। बस एक ही रिश्ता है, वह है गुरु शिष्य का जिसकी अनिवार्य शर्त है 'सह वीर्यं' कितना सुन्दर पद है। इसमें साथ चलेंगे, साथ पढ़ेंगे, साथ बैठेंगे, एक दूसरे का सहारा लेकर, एक दूसरे से पूछकर, एक दूसरे की क्षमता से, साँझी गति से, ताकि कोई पिछड़े नहीं। इसमें फेल करने का भय नहीं, फेल होने की शंका भी नहीं। जब सह वीर्यं है तो कम अंक तथा ज्यादा अंक की प्रतिस्पर्धा ही नहीं है। जब मिलकर करना है तो ये भय ही नहीं है कि वह पहले कर लेगा तथा प्रथम आ जाएगा, ये तो समूह में करना है ये तो दल में करना है यहाँ तो टीम भावना ही सर्वोपरि है। यहाँ तो नज़र अंदाज़ होने की या करने की संभावना ही नहीं है। जब सबको साथ चलना है और सबके साथ चलना है तो यहाँ इक्वेलिटी नहीं, इक्विटी सर्वोपरि है क्योंकि 'सह वीर्यं' में गुरु और शिष्य हिस्सेदार हैं। यहाँ तो निष्पक्षता भी है, क्षमता भी है, क्योंकि जो कमज़ोर है या छोटा है या थोड़ा धीमे है या थोड़ा सरल है, गुरु जी द्वारा उसके लिए उसकी जरूरत के अनुसार अधिक या अतिरिक्त संसाधनों का प्रबन्ध करके उसे उपलब्ध करवाने हैं, क्योंकि सबको साथ-साथ लेकर चलना है। कम दक्षता अथवा अक्षमता की खाई को भरने के लिए अतिरिक्त आपूर्ति करके ही कदमताल होगी, साँझी गति, साँझे लक्ष्य की ओर, साँझी यात्रा तय समय में लेकर जाएगी।

पूरी शिक्षा व्यवस्था में जितनी भी ढाँचागत सुविधाएँ हैं या पठन-पाठन सामग्री है, टीएलई, टीएलएम, आईसीटी है या विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए संसाधन हैं, जितनी शिक्षण विधियाँ हैं, प्रणालियाँ हैं, मूल्यांकन टैस्ट हैं पूरे का पूरा शिक्षण शास्त्र है जिसमें डी-एड, बी-एड, बीएल-ईडी, एम-एड से लेकर शिक्षा में विद्या वाचस्पति तक सारे का सारा यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र 'सह वीर्यं करवावहै' हो सके इसी के लिए है, इसी उद्देश्य से है, इसी प्रयोजन से है जिससे एक अध्यापक 'सह वीर्यं करवावहै' को धरातल पर ला सके। इसके लिए सारा मानव संसाधन, जिसमें स्कूल का मुखिया, बाबू से लेकर सीआरसी, बीआरपी, एबीआरसी से लेकर उसके बीईओ, डीईओ, डीईईओ, खंड व जिला स्तरीय अधिकारियों की पूरी फौज, एससीईआरटी तथा निदेशालय में बैठी अति बुद्धिजीवी विशेषज्ञों की पूरी बटालियन या पलाटून, उनके पलाटून कमांडर सब के सब 'सह वीर्यं करवावहै' को सफल बनाने के लिए हैं। निदेशालय में सारे क्लर्क से लेकर सहायक, छोटे बाबू से लेकर बड़े बाबू तक, खंड, जिला, निदेशालय के अधीक्षक से लेकर सभी सहायक, निदेशक, उप निदेशक, संयुक्त निदेशक, अतिरिक्त निदेशक, तीनों विभागों के निदेशक, एससीईआरटी निदेशक, बोर्ड का पूरा अमला तथा अतिरिक्त मुख्य सचिव से लेकर मन्त्री महोदय तक केवल और केवल इसलिए हैं कि प्रत्येक स्कूल में कक्षा-कक्ष में बैठा वह गुरु अपने शिष्यों के समूह के साथ मिलकर केवल और केवल 'सह वीर्यं करवावहै' को संभव

कर सके, क्योंकि पूरे शिक्षा विभाग का निर्माण/गठन ही इसके लिए हुआ है।

महोदय ने कहा आज इस कक्ष में इन 200 लोगों में या पूरे आयोजन में आये या बड़े सभागार में आये, बैठे और सुन रहे अनुमानित 4000 लोगों में पूरे भारत के शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे लोग शामिल हैं। ये लोग मंत्रालयों से लेकर निदेशालयों तक में हैं, उच्च शिक्षण संस्थाओं में योजनाकार, प्रबन्धक, वित्तपोषक बजट आबंटन करने वाले, मूल्यांकन करने वाले, पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तक बनाने वाले शिक्षण शास्त्री, खोजकर्ता, नवाचारी, प्रयोगधर्मी, संयोजक, परामर्शदाता, दानदाता, तकनीक के निर्माता आईसीटी, शिक्षण तकनीक जिसे एजुटेक कहा जाता है, आदि क्षेत्रों से जुड़े है। महोदय ने कहा, इन सबके बदलने से, जागरूक होने से, प्रगतिशील होने से महत्त्वपूर्ण है कक्षा-कक्ष का वातावरण बदले, सीधे क्लास में बदलाव आये। वहाँ पर जो धरातल है, जो शिक्षण का ग्राउंड ज़ीरो है, वहाँ पर बदलाव आये। कक्षा का अध्यापक, कक्षा के विद्यार्थी, कक्षा का शिक्षण अधिगम बदले व अध्यापक उस बदलाव को स्वीकारें, अपनायें, अंगीकार करें, क्रियान्वयन करें, इसके लिये ये सभी मिलकर कार्य करें, क्योंकि 'सह वीर्यं करवावहै'।

महोदय ने यह भी कहा कि विद्यार्थी प्रश्न पूछे, उसे इसकी स्वतंत्रता मिले और वातावरण भी मिले, अध्यापक उसकी उत्सुकता और उत्साह को बनाये रखे, उसके कौतूहल को देखे, उसे जिज्ञासु बनाये, उसका जानने, समझने, देखने, परखने का नैसर्गिक गुण न केवल बना रहे, अपितु पोषित हो, ताकि प्रत्येक विद्यार्थी साथ चले, पिछड़े नहीं, छूटे नहीं। यह सत्य है कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों का पूरा ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि इनके पिछड़ने से सह वीर्य नहीं होगा। परन्तु उन विद्यार्थियों को भी खोजना चाहिए जो प्रखर बुद्धि हैं, जो उत्कृष्ट हैं जो गिफ्टिड चाइल्ड की श्रेणी में आते हैं, प्रतिभाशाली की श्रेणी में हैं, जो असाधारण हैं, उनकी प्रतिभा की पहचान, उसकी रणनीति, उसमें चुनौतियाँ, उनकी प्रतिभा का पोषण अवश्य हो, क्योंकि 'सह नौ भुनक्तु' तो उनके लिये भी है। अतः ऐसे विद्यार्थियों का संरक्षण भी अति आवश्यक है। महोदय ने कहा कि कोई भी बच्चा पढ़ने से न छूटे, यह अनिवार्य है क्योंकि यदि कुछ बच्चे नहीं पढ़ेंगे तो देश को हानि होगी। लेकिन कक्षा-कक्ष में बैठ किसी रामानुजन की पहचान समय पर नहीं हुई, उसकी असाधारण प्रतिभा को पहचान कर पोषित न किया गया तो विश्व को हानि होगी। इसका ध्यान रखना भी अति अनिवार्य है। महोदय ने कहा कि ऐसे बच्चे अध्यापक के लिए प्रॉब्लेम चिल्ड्रेन की तरह न होकर संसाधन की तरह हों, क्योंकि इनकी खोजी प्रकृति और प्रवृत्ति, रचनात्मक सोच, आलोचनात्मक सोच, विश्लेषणात्मक सोच, समस्या की पहचान, उसका समाधान तथा निर्णय लेने का नज़रिया सामान्य बच्चों से बिल्कुल भिन्न होता है। इनके लिए जो कार्यक्रम बने वह कठोर न होकर लचीला हो, जिसमें आत्म जागरूकता के लिए स्थान हो, जो संचार कौशलों, नेतृत्व कौशलों या समाज के प्रति चिन्ता जैसी दक्षताओं को पोषित करता हो। ऐसे सभी प्रयास जो ईज़ ऑफ लर्निंग की ओर ले जाते हैं, हमेशा सराहनीय होने चाहिए, क्योंकि इनके गुण संवर्धन के लिए किए गये प्रयास ही पूरे विश्व के लिए ईज़ ऑफ लीविंग संसाधनों के अविष्कारक बनेंगे। अतः विद्यार्थी को पुस्तक में, पाठ्यक्रम में, अध्यापन में त्रुटि निकालने का या त्रुटि पहचानने का अवसर देना बहुत कल्याणकारी प्रयास हो सकता है जो विद्यार्थी की खोजी प्रवृत्ति को बढ़ावा देगा। यह विद्यार्थी को अन्वेषण करने को प्रेरित करेगा, उसके छोटे-छोटे प्रयासों को यदि सराहना और पहचान दी जाए तो उसकी अभिप्रेरणा का स्तर उच्च रहेगा। अध्यापक विद्यार्थी के पास विद्यार्थी के साथ सहजता से सरलता से यह स्वीकारें कि मुझे इस विषय, उप विषय पर तुमसे थोड़ी कम जानकारी है या तुम्हारे पास ताजा जानकारी है, तुम्हारे अध्ययन में मुझे रुचि है और आओ मिलकर इसका हल खोजते हैं यही 'सह वीर्यं करवावहै' होगा।

इसी से 'तेजस्वि नावधीतमस्तु' होगा। ये तेजस्वी बनने की ओर बढ़ने वाले कदम होंगे, प्रयास होंगे। यहीं इस ऋचा में कहा गया है कि प्रतिभाशाली, प्रखर बुद्धि, असाधारण विद्यार्थी अपने गुरु के साथ मिलकर सह वीर्यं करते हुये तेजस्वी होने और इसी ऋचा का चौथा पद सबसे महत्त्वपूर्ण बात कहता है कि 'मा विद्विषावहै'।

हमारे, हम दोनों के मध्य कोई ईर्ष्या न हो, हम विरोधी न बनें, हमारी एक-दूसरे से नकारात्मक प्रतिस्पर्धा न हो, आपसी द्वेष की भावना या बदले की भावना न हो, कृतघ्न न बनें, बुराई न करें, विरोध न हो, क्रोध न हो, इसमें दोनों में बड़े-छोटे की भावना का संचार न हो। समदर्शी हो जायें, एक दूसरे की साख का, भलाई का ख्याल करें। वाह! कितना महत्त्वपूर्ण पद है, जहाँ गुरु कामना कर रहा है कि हे प्रभु! मेरा शिष्य मुझ से आगे बढ़े और मैं उसकी सफलता पर गर्व कर उसे स्वीकार करूँ, अंगीकार करूँ तथा उसके साथ आनन्द मनाऊँ, कोई द्वेष न हो, कोई टकराव न हो, नकारात्मकता न हो और शिष्य में भी इस सफलता का अहंकार न आये, दंभ न आये, वह धरातल न छोड़े, उसे ये न लगे कि आज मैंने गुरु को परास्त कर दिया है। बहुत ही मित्रवत, बाल केन्द्रित यही तो है जिसका उल्लेख भारतीय और पाश्चात्य दोनों जगत के शिक्षाविद करते रहे हैं।

मैं साक्षी हूँ उस Thematic Sessionका जिसमें एनसीईआरटी के विभिन्न कॉलेज, विश्वविद्यालयों के विद्वानों ने ये कहा कि एक ऋचा के माध्यम से आज हम सबकी enlightment हुई है, प्रबोधन हुआ है जिससे जागरूकता आई है, अर्न्तदृष्टि बढ़ी है, ज्ञान की पिपासा शांत हुई है। इस सैशन में भागीदार होना तथा महोदय को सुनना मेरे जीवन का ऐसा अनुभव रहा जिससे मेरा भी प्रबोधन हुआ।

पूरी शिक्षा व्यवस्था जिसमें समस्या, चुनौतियाँ, स्थिति, उनके समाधान सब एक तरफ तथा विद्यार्थी और शिक्षक सम्बन्ध एक तरफ हों। यजुर्वेद की यह ऋचा सदियों से पूर्णतः सार्थक है।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

नयी शिक्षा नीति के साथ बदलने को तैयार हरियाणा के स्कूल

मनोज कौशिक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने स्कूलों में 21वीं सदी के कौशलों के विकास पर महत्त्वपूर्ण ज़ोर दिया है। इन कौशलों को छात्रों को तेजी से बदलते और वैश्विकरण हो रहे दुनिया में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 यह स्वीकार करती है कि पारंपरिक रटन्त आधारित शिक्षा अपर्याप्त है और यह पूर्णता से और कौशल-मुखित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य रखती है। यहाँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 से संबंधित 21वीं सदी के कौशलों के कुछ मुख्य बिंदु दिए गए हैं, जिनके आधार पर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को भविष्योन्मुख बनाने के लिये आवश्यक एवं स्पष्ट संकेत मिलते हैं :

कौशल एकीकरण (Skill Integration): राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, 21वीं सदी के कौशलों के एकीकरण को प्रोत्साहित करती है, जैसे पाठ्यक्रम और शिक्षा-सीखने प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण- विचारणा, रचनात्मकता, संवाद, सहयोग, समस्या-समाधान और डिजिटल साक्षरता आदि।

अनुभवात्मक शिक्षा (Experiential Learning): नीति अनुभवात्मक और क्रियात्मक शिक्षा विधियों को प्रोत्साहित करती है ताकि व्यावहारिक कौशल और ज्ञान के वास्तविक अनुप्रयोग का विकास हो सके। इसमें हाथों के अनुभव और प्रोजेक्ट के माध्यम से सीखने पर ज़ोर दिया जाता है।

व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education): राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 व्यावसायिक शिक्षा के महत्त्व को मानती है और छात्रों को शैक्षिक सीख के साथ-साथ व्यावसायिक कौशल प्राप्त करने के अवसर प्रदान करने का उद्देश्य रखती है। यह रोज़गार क्षमता और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए है।

विषय-पारस्परिक शिक्षा (Cross-Disciplinary Learning): नीति पारस्परिक और अन्य विषयों के बीच संबंध बनाने और विभिन्न संकेतों में ज्ञान का अनुप्रयोग करने की प्रोत्साहन करती है।

समालोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान (Critical Thinking and Problem-Solving): राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 छात्रों के बीच महत्त्वपूर्ण विचारणा और समस्या-समाधान की क्षमता को पूर्णता से विकसित करने के महत्त्व को बताती है। इसका उद्देश्य परिस्थितियों का विश्लेषण करना, जानकारी का मूल्यांकन करनाऔर नवाचारी समाधान ढूँढने में उनकी क्षमता को विकसित करना है।

रचनात्मकता और नवाचार (Creativity and Innovation): नीति, छात्रों की रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल देती है। यह स्कूलों को एक ऐसा वातावरण प्रदान करने की प्रेरणा देती है, जहाँ छात्र अपनी रचनात्मक संभावना की खोज कर सकते हैं और मूल विचारों के साथ प्रस्तुत कर सकते हैं।

संवाद और सहयोग (Communication and Collaboration): राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 प्रभावी संवाद और सहयोग-कौशल के विकास को महत्त्वपूर्ण मानती है। छात्रों को टीम के साथ काम करने, अपने विचार स्पष्टता से व्यक्त करने और अर्थपूर्ण

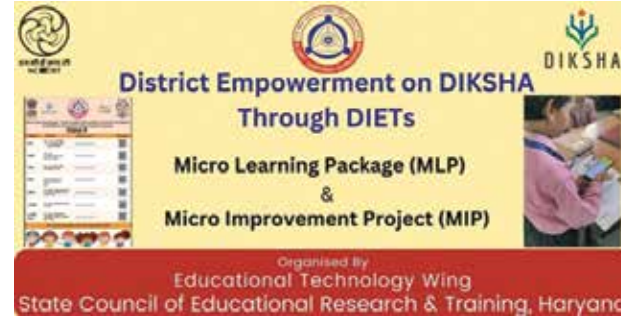

चर्चाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy): नीति 21वीं सदी में डिजिटल साक्षरता के महत्त्व को मानती है। यह शिक्षा को टेक्नोलॉजी को एकीकृत करने का उद्देश्य रखती है ताकि छात्रों के डिजिटल-कौशलों को बढ़ावा दिया जा सके, जिससे वे डिजिटल प्लेटफॉर्म्स को सफलतापूर्वक नेविगेट कर सकें।

जीवन कौशल (Life Skills):राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 सहानुभूति, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, नैतिक तर्क, और निर्णय लेने जैसे जीवन कौशलों की शिक्षा के महत्त्व पर जोर देती है। इन कौशलों को व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण के लिए आवश्यक माना जाता है।

मूल्यांकन (Assessment): नीति केवल परीक्षा-मुखित मूल्यांकन प्रणाली से हटने का सुझाव देती है। यह स्कूलों को विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन विधियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिनमें 21वीं सदी के कौशलों सहित एक अधिक व्यापक प्रकार के कौशलों का मूल्यांकन किया जाता है।

शिक्षक प्रशिक्षण(Teacher Training): राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक-विकास की आवश्यकता पर बल देती है ताकि शिक्षकों/शिक्षक-प्रशिक्षकों को इस कार्य में निपुण कर दिया जाए जिससे उनमें 21वीं सदी के कौशलों को उनकी शिक्षा-प्रणाली में प्रभावी रूप से एकीकृत करने की योग्यता उत्पन्न की जा सके।

कुल मिलाकर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 उस पाठ्यक्रम की कल्पना करती है जो केवल रटने के बजाय छात्रों के मानसिक, रचनात्मक, भावनात्मक और सामाजिक कौशलों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है, ताकि वे 21वीं सदी में सफलता प्राप्त करने के लिए तैयार हो सकें। यह एक छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण को बल देती है और उद्यमिता और अर्थशास्त्र में सकारात्मक योगदान करने की क्षमता वाले समर्थ व्यक्तियों को बनाने का उद्देश्य रखती है।

विभाग द्वारा ऐसे कई कार्यक्रम वर्तमान में जारी हैं जो विद्यालयी आवश्यकताओं पर आधारित होने के साथ साथ नयी शिक्षा नीति की सिफारिशों से प्रेरित हैं। ई-अधिगम, एफएलएन, दीक्षा, निष्ठा, स्मार्ट-कक्षाएँ, कम्प्यूटर, भाषा एवं वोकेशनल प्रयोगशालाएँ , बुनियाद आदि अनेक ऐसे कदम उठाये गए हैं जो सफलतापूर्वक एनईपी व एनसीएफ के उद्देश्यों के अनुरूप विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रशिक्षकों को तैयार करने में लगे हैं। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् भी विभागीय प्रतिबद्धताओं को पूरा करने को कृत-संकल्प है। शैक्षिक-तकनीक के क्षेत्र में परिषद् द्वारा उठाये जा रहे कुछ पहल इस प्रकार हैं-

डिजिटल शिक्षक कार्यक्रम-

इसके अंतर्गत :-

(1) डिजिटल सामग्री विकास (एड्यूसैट एवं दीक्षा हेतु), छुट्टी / रिवीजन की पाठशाला, नए इंटरैक्टिव वीडियो का निर्माण(नीव), अभ्यास कार्यपत्र निर्माण आदि सम्मिलित हैं ।

(2) डिजिटल सामग्री मूल्यांकन प्रोग्राम(एड्यूसैट एवं दीक्षा हेतु), टैब-PAL (ई-अधिगम के तहत टैब सामग्री का मूल्यांकन), ई-सामग्री मूल्यांकन दिशानिर्देशिका दस्तावेज और ई-उपकरण के विकासआदि सम्मिलित हैं ।

जिला शिक्षा संस्थानों की डिजिटल सशक्तीकरण-

DIET जिला स्तर पर कई पहलों के प्रभारी हैं। वे एक महत्त्वपूर्ण निकाय हैं जो हितधारकों को सशक्त बनाने और शिक्षा में सुधार के लिए पहल की डिजाइन और योजना बनाते हैं। डाइट्स, एससीईआरटी के मार्गदर्शन पर विभिन्न प्रकार के शैक्षिक-हस्तक्षेप जैसे छात्र नामांकन ड्राइव, शिक्षक की आवश्यकता विश्लेषण या छात्र योग्यता परीक्षण,

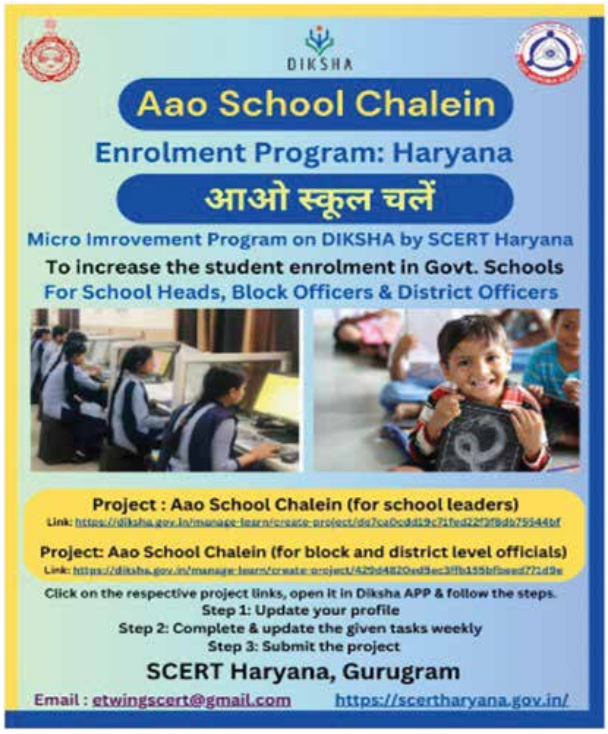

शिक्षक क्षमता निर्माण आदि कुछ कार्यक्रम हैं,जो वे चलाते हैं। राज्यों के पास डाइट्स को इन अधिकारों को प्रदान करने की क्षमता है ताकि उन्हें अपने स्वयं के डिजिटल कार्यक्रमों की कल्पना करने और चलाने के लिए सशक्त बनाया जा सके। एससीईआरटी द्वारा,इसके तहत प्रदेश की सभी डाइट्स को अब दीक्षा प्लेटफॉर्म पर सामग्री बनाने / समीक्षा करने या प्रकाशित करने का अधिकार दे दिया गया है ।

ऑनलाइन अनुभवात्मक शिक्षण कार्यक्रम (STAM)-

एससीईआरटी हरियाणा गुरुग्राम शिक्षकों और मास्टर ट्रेनर्स के माध्यम से छात्रों के बीच सीखने के अनुभव को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। इन प्रशिक्षणों में कम लागत / बिना कोई लागत और हमारे आसपास आसानी से उपलब्ध सामग्री शामिल होगी।

एक ऑनलाइन अनुभवात्मक शिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थियों को एक आभासी वातावरण में इमर्सिव और व्यावहारिक सीखने के अनुभव प्रदान करना है। कार्यक्रम का उद्देश्य पारंपरिक सैद्धांतिक निर्देश से परे जाना है और सीखने की प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए हाथों पर, वास्तविक दुनिया के सिमुलेशन, गतिविधियों और परियोजनाओं की पेशकश करना है।

शिक्षकों के लिए ई-कंटेंट डेवलपमेंट प्रोग्राम-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में कहा गया है कि शिक्षा प्रणाली को चलाने के लिए मुख्य सिद्धांतों में से एक होगा - शिक्षण और सीखने में प्रौद्योगिकी का व्यापक उपयोग, भाषा-बाधाओं को दूर करना, पहुँच बढ़ाने के साथ-साथ शिक्षा योजना और प्रबंधन सीआईईटी-एनसीईआरटी के एसआरजी ओरिएंटेशन के आधार पर, एससीईआरटी टीम हरियाणा वर्ष 2021-22 प्रशिक्षित 1200 शिक्षकों को जारी रखते हुए वर्ष 2022-23 और 2023-24 में ई-कंटेंट डेवलपमेंट के कौशल में 6000 से अधिक शिक्षकों और प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

गुरुग्राम में छात्रों के सीखने पर एक डिजिटल पहल की प्रभावशीलता पर एक्शन रिसर्च-

इस अध्ययन का उद्देश्य था- प्राथमिक स्तर पर छात्रों के सीखने के लिए स्मार्टफोन का प्रभावी ढंग से उपयोग सुनिश्चित करना। एससीईआरटी हरियाणा द्वारा गुरुग्राम जिले के 101 स्कूलों में एक एक्शन रिसर्च की गई। अध्ययन के दौरान पहचाने गए विभिन्न मुद्दों, चुनौतियों को संभावित समाधानों का उपयोग करके संबोधित किया गया था।

निगरानी और मूल्यांकन पर ऑनलाइन प्रमाणन पाठ्यक्रम (लीड)-

लीडरशिप एन्हांसमेंट एंड एकेडमिक डेवलपमेंट (लीड) राज्य शिक्षा विभाग के अधिकारियों के क्षमता निर्माण के लिए एक ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रम है। ये पाठ्यक्रम ब्लॉक/क्लस्टर स्तरों के मध्य प्रबंधन अधिकारियों की जरूरतों को पूरा करते हैं। लीड पाठ्यक्रम मुफ्त हैं और हिंदी में ऑनलाइन शिक्षण मोड में आयोजित किए जाते हैं। असाइनमेंट में अधिकारियों को मिलने वाले क्रेडिट के आधार पर, उन्हें संबंधित पाठ्यक्रमों में प्रमाणन से पुरस्कृत किया जाता है।

विद्या अमृत महोत्सव (अभिनव शिक्षाशास्त्र महोत्सव)-

सीआईईटी-एनसीईआरटी ने 14 अक्टूबर, 2022को 'विद्या अमृत महोत्सवः एक सूक्ष्म-सुधार के नेतृत्व वाले अभिनव शिक्षाशास्त्र महोत्सव' का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पूरे भारत में शिक्षकों और स्कूल के नेताओं द्वारा लागू अभिनव शिक्षाशास्त्र के लिए सूक्ष्म सुधारों को बढ़ावा देना और पहचानना है। दीक्षा द्वारा सूक्ष्म सुधार दृष्टिकोण का उपयोग करके, राज्य अपने विद्या अमृत महोत्सव को शुरू करने में सक्षम होंगे। हरियाणा एससीईआरटी ने दीक्षा के 'वन नेशन, वन डिजिटल प्लेटफॉर्म' से प्रेरित VAM- 2022 को बढ़ावा देने के लिए वन स्कूल, वन प्रोजेक्ट अभियान शुरू किया।

विद्या अमृत महोत्सव के माध्यम से स्कूल के भीतर नवाचारों को प्रोत्साहित करना, स्कूल में सुधार का संग्रह बनाना, स्कूल टीम के प्रयासों को पहचानकर नवाचार को बढ़ावा देना आदि लक्ष्य रखे गए हैं। जिला स्तर एवं राज्य स्तर पर उत्कृष्ट वीडियोज़ का चयन कर वे एनसीईआरटी को अंतिम निर्णय हेतु भेज दिए गए हैं ।

स्कूलों में माइक्रो सुधार परियोजनाएँ (आओ स्कूल चलें)-

राजकीय विद्यालयों में नामांकन बढ़ाने के लिए एनसीईआरटी, एससीईआरटी हरियाणा, डायट्स एवं बीआरसी के सम्मलित प्रयास से दीक्षा पोर्टल हरियाणा पर एक

माइक्रो इंप्रूवमेंट प्रोजेक्ट का शुभारम्भ माननीय निदेशक एससीईआरटी द्वारा 6 अप्रैल, 2023 को किया गया। राज्य के सभी विद्यालयों द्वारा इस वर्ष दीक्षा एप्प पर एक माइक्रो इम्प्रूवमेंट प्रोजेक्ट के रूप में के रूप में अपने विद्यालय का नामांकन कराया गया और नामांकन बढाने के अपने प्रयासों/अनुकरणीय अभ्यासों को प्रमाणों एवं दस्तावेजों के साथ दीक्षा एप पर अपलोड किया गया । इस कार्य में सभी ब्लॉक व जिला शिक्षा अधिकारियों के सहयोग से डाइट्स द्वारा कार्यक्रम संबंधी सभी गतिविधियों की देखरेख सुनिश्चित की गयी। ब्लॉक स्तर पर 10 लो-एनरोलमेंट वाले विद्यालयों की एक लिस्ट डाइट द्वारा एससीईआरटी को उपलब्ध कराई गयी,जिन पर ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तरीय टीमें विशेष तौर पर निगरानी रखी गयी ।

DIET में शिक्षा प्रौद्योगिकी गतिविधियों का मासिक मॉनिटरिंग-

राज्य की सभी डाइट्स के कार्यों की मासिक देखरेख, विस्तृत रूप से एससीईआरटी द्वारा प्रतिमाह की जाती है । विशेष तौर पर जिले में चल रही सभी डिजिटल टीचिंग लर्निंग के प्रयासों की समीक्षा की जाती है। विभाग व एससीईआरटी द्वारा दिए गए सभी टेक्नोलॉजी के कार्यक्रमों के क्रियान्वयन, चुनौतियों एवं अनुकरणीय प्रयासों पर प्रत्येक डाइट को कार्य का आबंटन एवं प्रगति का विश्लेषण परिषद् द्वारा किया जाता है ।

छात्रों के लिए साइबर सुरक्षा प्रोग्राम-

साइबर सुरक्षा कार्यक्रम के लिए एक राज्य संसाधन समूह (एसआरजी) बनाया गया था और एसआरजी के सदस्यों ने दिसंबर, 2022 के दौरान सीआईईटी, एनसीईआरटी से प्रशिक्षण लिया था। अब इसके अनुसार, स्कूल शिक्षकों और छात्रों के लिए जिला, ब्लॉक और स्कूल स्तर पर कार्यक्रम सभी डाइट्स द्वारा संबंधित जिलों से संबंधित एसआरजी सदस्यों के साथ आयोजित किए गए। प्रस्तावित गतिविधियों की सूची मास्टर ट्रेनर्स एवं अध्यापकों को भेज कर इस कार्यक्रम के द्वारा प्रति ब्लॉक 25 विद्यालय, प्रत्येक विद्यालय से लगभग 100 छात्रों को लेते हुए कुल 3000 शिक्षक एवं 3 लाख छात्रों तक पहुँच के लक्ष्य के साथ अभियान जारी है।

नींवः बुनियादी अधिगम कार्यक्रम (Foundational Learning Program):

माध्यमिक कक्षाओं (कक्षा 9 व 10) के लिए यह कार्यक्रम प्रमुख विषयों (विज्ञान, गणित) में छात्रों को उपचारात्मक निर्देश प्रदान करता है । वर्तमान में दो जिले के 4 विद्यालयों से आरम्भ कर 100 विद्यालयों के विद्यार्थियों को पाठाधारित डिजिटल सामग्री उपलब्ध करवाना इसका लक्ष्य है। लाइव कक्षा के माध्यम से शंका समाधान हेतु शिक्षक नियमित रूप से अपने विद्यार्थियों से जुड़ते हैं। एससीईआरटी की ओर से इन शिक्षकों को Infographics का माध्यम, वीडियो रिकॉर्डिंग, वीडियो संपादन वीडियो, इंटरैक्टिव वीडियो, ऑनलाइन क्विज़ आदि का प्रशिक्षण देने के साथ-साथ इस परियोजना के शैक्षिक प्रभावों के अध्ययन की निगरानी भी की जा रही है।

एलीमेंट्री टीचर्स मेंटरिंग कार्यक्रम-

कक्षा 4 से 8 तक के शिक्षकों को विद्यालय स्तर पर अकादमिक व पेडागोजी सहयोग, आवश्यकतानुसार प्रशिक्षण, कक्षा निरीक्षण, सीखने का स्पॉट मूल्यांकन, मुखिया एवं समुदाय से विमर्श आदि कार्यों के लिए 1600 से अधिक मेंटोर्स एससीईआरटी से जुड़े हैं। डाइट्स और ब्लॉक अधिकारियों के माध्यम से प्रति माह ब्लॉक, जिला एवं राज्य स्तर पर इनका उन्मुखीकरण और दिशानिर्देश के साथ-साथ समीक्षा मोबाइल एप्प द्वारा रिपोर्टिंग एवं फीडबैक आदि का कार्य एससीईआरटी की देखरेख में जारी है।

स्कूल शिक्षा में मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (MOOC)-

मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स (एमओओसी) एक मुफ्त वेब-आधारित दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम है, जो भौगोलिक रूप से बिखरे हुए छात्रों की बड़ी संख्या के लिए डिज़ाइन किया गया है। किसी को भी नामांकन करने के लिए मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम मूक पर उपलब्ध हैं। ये नए कौशल सीखने, अपने करियर को आगे बढ़ाने और पैमाने पर गुणवत्ता शैक्षिक अनुभव प्रदान करने के लिए एक सस्ती और लचीला तरीका प्रदान करते हैं।एससीईआरटी हरियाणा की ओर से एनसीईआरटी व आरआईई अजमेर के साथ मिलकर राज्य में मूक को लागू करने की योजना पर कार्य अपने अंतिम चरण में है। अगस्त माह में ये कोर्स अध्यापकों के लिए उपलब्ध होंगे।

स्पष्ट है कि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के लक्ष्यों को नियत समयाविधि में प्राप्त करने के लिए राज्य में विभिन्न स्तरों पर कई आवश्यक पहलों का शुभारम्भ हो चुका है और कई अन्य परियोजनाएँ शुरू भी की जानी हैं। ये सिर्फ कुछ उदाहरण हैं जिनके आधार पर शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के प्रयासों की निरंतरता सुनिश्चित की जानी चाहिए । इन्हें सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए नीतियों, योजनाओं, और क्रियान्वयन के साथ-साथ सामाजिक समर्थन का भी सहारा लेने की आवश्यकता होगी ।

वरिष्ठ विशेषज्ञ/ विभागाध्यक्ष
शैक्षिक तकनीक विभाग
एससीईआरटी हरियाणा, गुरुग्राम

क्या है एनईपी में केजी टू पीजी की अवधारणा ?

डॉ. ऋषि गोयल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को घोषित हुए तीन वर्ष पूरे हो गए हैं। केन्द्र सरकार के साथ-साथ राज्य सरकारें भी पूरे जोर-शोर से शिक्षा-नीति के भिन्न-भिन्न पक्षों के क्रियान्वयन की घोषणाएँ कर रही हैं। यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर नीति के पूर्ण क्रियान्वयन के लिए 2030 तक की समय रेखा निश्चित की गई है। हरियाणा राज्य ने शिक्षा नीति को 2025 तक सम्पूर्ण रूप से लागू करने की उत्साहवर्धक घोषणा की है। अभी हाल में हरियाणा प्रदेश में कतिपय विश्वविद्यालयों द्वारा शिक्षा नीति की भावना के अनुरूप केजी टू पीज़ी की अवधारणा को लागू किए जाने की रिपोर्टिंग भी की गई है। ज्ञातव्य है कि हरियाणा के मुख्यमंत्री महोदय द्वारा विश्वविद्यालयों को अपने यहाँ केजी टू पीजी को लागू करने का आह्वान भी किया गया है। विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के केन्द्र तो हैं ही, उसके साथ कई विश्वविद्यालयों के परिसरों में अपने-अपने कैम्पस स्कूल भी पहले से ही चलाए जा रहे थे, कक्षा केजी से बारहवी तक की कक्षाएँ भी इन कैंपस स्कूलों में पहले से ही चल रही थीं। ऐसे में तो यह माना जाना चाहिए कि ये संस्थान पहले से ही केज़ी टू पीज़ी की शिक्षा के केन्द्र के रुप में विद्यमान थे। ऐसी स्थिति में यह समझने की आवश्यकता है कि अन्ततः केजी टू पीजी का असली अभिप्राय क्या है? स्कूल कक्षाओं और उच्च शिक्षा की कक्षाओं का किसी एक चारदीवारी के भीतर मौजूद होना ही क्या केज़ी टू पीज़ी का अर्थ है। मेरी दृष्टि में केज़ी टू पीजी की अवधारणा हमारी शिक्षा व्यवस्था में मौजूद विखंडित संरचनाओं को आपस में जोड़ने की दृष्टि प्रदान करती है। इन विखंडित संरचनाओं को आपस में जोड़कर एक समग्र शैक्षिक इको-सिस्टम बनाने के लिए क्या किया जाए, ये जाने की आवश्यकता है इसको ठीक से समझकर ही केजी टू पीजी की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान कर सकते हैं।

शिक्षा का नवयुग

सरकार द्वारा दूरदर्शी सुधारात्मक परिवर्तन के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का शुभारंभ किया जा रहा है। पुरानी शिक्षा नीति में सुधार की आवश्यकता महसूस की जा रही थी जिसको सरकार द्वारा शिक्षा एवं कौशल संवर्धन के साथ-साथ, विद्यार्थी के सार्वभौमिक एवं सर्वांगीण विकास को केंद्र मानकर किया गया है। नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध करवाना है। भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ-साथ व्यावसायिक एवं व्यावहारिक ज्ञान को भी इस नीति में शामिल किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर रोज़गार के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए शिक्षा नीति में आवश्यक परिवर्तन किए गए हैं और मूलतः करके सीखने पर पूर्ण ज़ोर दिया गया है। यह ऐसी पहली शिक्षा नीति है जिसमें देश के विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए जो आवश्यक है, उसे केंद्र माना गया है। इस नीति को भारतीय ज्ञान एवं परंपरा को वैश्विक पटल पर विशेष पहचान प्राप्त करने के लिए आधारभूमि के रूप में तैयार किया गया है, ताकि प्रत्येक जनमानस अपनी जड़ों से जुड़े और विकास का एक नया इतिहास कायम कर सके।

अनिल कौशिक
गणित अध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सांधी, रोहतक, हरियाणा

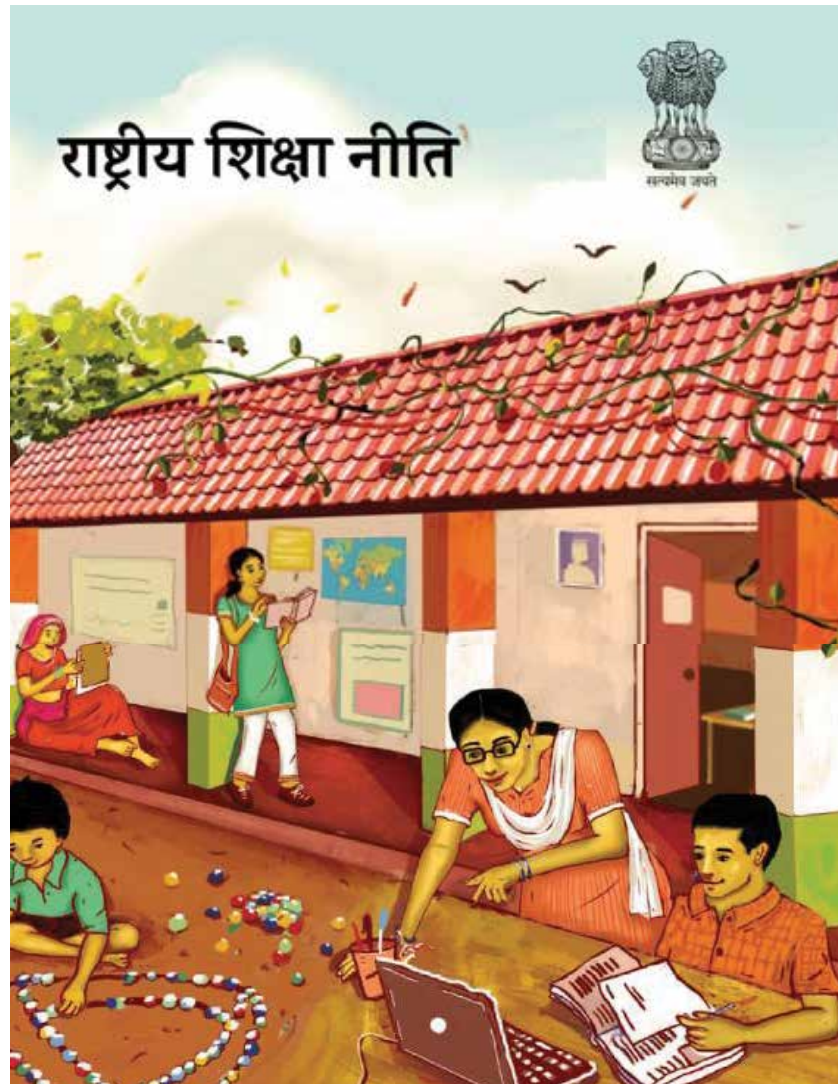

शैक्षिक विखण्डन की प्रथम अनुभूति तो छात्रों के स्तर पर ही होती है। प्रायः यह देखने में आता है कि स्कूल की अन्तिम कक्षा में आने तक भी छात्र को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों, संस्थानों प्रवेश प्रक्रिया आदि की न्यूनतम जानकारी होती है। जानकारी के इस अभाव को दूर करने के प्रयत्न या तो आजकल कुछ जागरूक विद्यालयों द्वारा अपने स्तर पर गाइडेंस और काउंसिलिंग के कुछ आयोजन करके की जाती है अथवा फिर व्यावसायिक उद्देश्यों से चलने वाले उच्च शिक्षा संस्थान अपने प्रचार के लिए विद्यालयी छात्रों को अपनी ओर लुभाने की कोशिश करते रहते हैं। प्रायः उच्च शिक्षा के अच्छे संस्थान और राजकीय क्षेत्र में चलने वाले महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की ओर से ऐसी कोई चेष्टा होती दिखाई नहीं देती, जिससे यह अनुभव किया जा सके कि वे अपने भौगोलिक क्षेत्र में चलने वाले विद्यालयों में जाकर छात्रों का मार्गदर्शन करते हों अथवा उन विद्यालयों के छात्रों और शिक्षकों का अपने परिसरों में स्वागत करते हों। इसी के चलते उच्च शिक्षा के परिसरों में प्रविष्ट होते हुए छात्रों में एक झेंप और अनजाने डर की अनुभूति की जा सकती है। अतः केवल भौतिक दृष्टि से एक परिसर में विद्यालय और महाविद्यालय की कक्षाओं का स्थित हो जाना मात्र पर्याप्त नहीं होगा। यह देखना होगा कि वर्ष में कितने अवसरों पर विद्यालय चलकर महाविद्यालय गया और महाविद्यालय चलकर विद्यालय के परिसर में आया।

शैक्षणिक अलगाव का एक दूसरा क्षेत्र शिक्षकों के स्तर पर अनुभव में आता हैं। भारत में स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर समय-समय पर चिंता व्यक्त की जाती रही है, छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों का सीधा संबंध शिक्षकों की गुणवत्ता से जुडा है। इसीलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रत्येक शिक्षक के लिए वर्ष में पचास घंटे का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य किया गया है। देखने में आता है कि शिक्षकों का यह प्रशिक्षण उनकी वास्तविक आवश्यकताओं पर आधारित न होकर प्रशासनिक लक्ष्यों की पूर्ति तक ही सीमित रहता है। ऐसा इसलिए अधिक होता है कि विद्यालयों के स्तर पर शिक्षकों की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं का कोई आकलन नहीं होता, न ही स्कूलों के मुखिया कभी इस ओर ध्यान देते हैं कि उनके अपने परिवेश में स्थित अन्य शिक्षा संस्थाओं में कौन-कौन ऐसे विशेषज्ञ उपस्थित हैं, जो उनके लिए प्रशिक्षक की भूमिका अदा कर सकते हैं। उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षकों के समक्ष भी ऐसा कोई लक्ष्य नहीं होता कि वे अपनी सामुदायिक दायित्व-पूर्ति (community out-reach) के रूप में विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के गुणवत्ता संवर्धन में कुछ योगदान करें।

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षकों के प्रशिक्षण अथवा स्तरोन्नयन के लिए जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से जो कुछ कार्यक्रम चलाए जाते हैं उनका दायरा मात्र सरकारी विद्यालयों तक ही सीमित है। इसमें यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप प्रत्येक स्कूली शिक्षक को 50 घंटे का अनिवार्य प्रशिक्षण दिया जाना है तो वह उच्च शिक्षण संस्थानों के साथ एक जीवंत साझेदारी के बिना संभव नहीं है। छात्रों एवं शिक्षकों के अतिरिक्त तीसरा विषय शैक्षिक संसाधनों के उपयोग से भी जुडा है। प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, खेल के मैदान, शैक्षिक प्रोद्योगिकी के उपकरणों प्रायः या तो उपलब्ध नहीं होते अथवा जहाँ उपलब्ध होते हैं, वहाँ उनका अपूर्ण उपयोग होता है। इस दृष्टि से भी एक क्षेत्र विशेष में चलने वाली सभी छोटी बड़ी संस्थाएँ कैसे एक दूसरे की पूरक बन सकती हैं, इसका विस्तृत विचार होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा-नीति यद्यपि विद्यालय कलस्टर बनाने और बड़े महाविद्यालयों के साथ छोटे महाविद्यालयों को संबंद्ध किए जाने की वकालत करती है, किंतु विद्यालय और महाविद्यालय स्तर की संस्थाओं में भी ऐसे आदान प्रदान और भागीदारी की व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं। वर्ष 2012 में केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित शिक्षक शिक्षा योजना (CSSTE) का एक दस्तावेज केन्द्र सरकार द्वारा जारी किया गया था। इस दस्तावेज में विद्यालयी शिक्षकों की गुणवत्ता के संवर्धन में उच्च शिक्षा संस्थानों और उनके शिक्षकों की सार्थक भागीदारी का एक विस्तृत रोडमैप प्रस्तुत किया गया था, परन्तु विद्यालयी शिक्षा और उच्च शिक्षा अलग-अलग विभागों द्वारा नियंत्रित होने और उनमें प्रायः शून्य संवाद होने के चलते परस्पर आदान-प्रदान तथा पूरकता अभी भी एक दिवास्वप्न ही बना हुआ है। आशा की जानी चाहिए कि आने वाले वर्षों में शैक्षिक विखण्डन को दूर करके भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्थाओं में परस्पर पूरकता स्थापित करने की ओर ध्यान दिया जायेगा।

निदेशक
स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन टीचर एजुकेशन, झज्जर, हरियाणा

गणित शिक्षण को सरल बनाता एक अनूठा गणित पार्क

महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के नाम पर किया गया भूना विद्यालय के गणित-पार्क का नामकरण

राजकुमार सुथार

गणित एक ऐसा विषय है जिसको रुचिकर बनाना अति आवश्यक है। एक गणित अध्यापक होने के नाते बहुत बार यह महसूस किया कि बच्चों की गणित में रुचि बनाए रखना अति आवश्यक है, अन्यथा बच्चे गणित विषय में अपनी पकड़ को लगातार कम करते जा रहे हैं। यह देखकर मन खिन्न होने लगता हैं कि बच्चे दैनिक जीवन में काम आने वाले व्यावहारिक गणित को भी नहीं समझ पाते। कक्षा में पढ़ाते हुए यह जाना कि बच्चे डी (D) के माध्यम से कोण को बनाने, अपरिमेय संख्या को संख्या रेखा पर निरूपण समझने, विभिन्न प्रकार की 3-डी आकृतियाँ को मन में धारण करने तथा इस प्रकार की बहुत सारी अन्य सामान्य जानकारी को समझने में असहज महसूस करते हैं, जिनके बगैर गणित शिक्षण की कल्पना नहीं की जा सकती। इसी प्रकार के बहुत से प्रश्न उत्पन्न होते हैं जब एक गणित अध्यापक कक्षा में गणित विषय को पढ़ाने जाता है, इन सब विषयों का उत्तर जाने बगैर व बच्चों की इन पर पकड़ बनाए बगैर उत्तरोत्तर कक्षाओं में गणित शिक्षण करवाना व उसकी समझ पैदा करना अति कठिन कार्य है। इन विषयों पर लगातार कार्य करने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि एक ऐसे पार्क का निर्माण किया जाए जिसमें गणित की उपर्युक्त सभी समस्याओं को मूर्त रूप देकर

सुलझाया जाए ताकि गणित विषय को रुचिकर बनाया जा सके। इस विषय पर लगातार कार्य करते हुए गणित पार्क का खाका तैयार हुआ।

जब कार्य आरंभ हुआ तब गणित पार्क को धरातल पर इसके वास्तविक रूप में लेकर आने का, जिसमें सबसे बड़ी बाधा थी कि इसका निर्माण कैसे किया जाए। जब इस रूपरेखा को स्कूल प्राचार्य श्री नरेश शर्मा के सामने रखा गया तो उन्होंने स्कूल के अन्य सभी अध्यापकों के साथ विचार-विमर्श करके आश्वस्त किया कि इस प्रकार के गणित पार्क के निर्माण से न केवल वर्तमान में विद्यालय के छात्र छात्राएँ, बल्कि आने वाली पीढ़ियाँ गणित पार्क से लाभान्वित होंगी। समस्त विद्यालय स्टाफ की मदद से गणित पार्क निर्माण को हरी झंडी प्रदान कर दी गई। इसके बाद मैंने गणित पार्क को मूर्त रूप देना आरंभ किया।

उक्त विचार तीन से चार महीनों की कड़ी मेहनत के बाद श्री रामानुजन गणित पार्क के रूप में अपने वास्तविक रूप में सामने आया, जिसका शुभारंभ जिला

मेरे द्वारा अवलोकन की गई विभिन्न प्रदर्शनियों व स्कूलों के भ्रमण में 'श्रीनिवास रामानुजन गणित पार्क' राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भूना, जिला फतेहाबाद सबसे उच्च स्तर के 'गणित में नवाचार'को दर्शाता है। मैं चाहूँगा कि हरियाणा राज्य के वे स्कूल जो अपने विद्यार्थियों को गणित में सुदृढ़ करना चाहते हैं, इस पार्क का अवलोकन एक बार अवश्य करें।

अशोक गर्ग
पूर्व निदेशक मौलिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भूना में बनाया गया 'श्रीनिवास रामानुजन गणित पार्क' वास्तव में गणित के विभिन्न आयामों को ध्यान में रखकर व गणित के ऐसे विषयों को सरल करता है जिन्हें विद्यार्थियों को समझने में परेशानी आती है। यदि सभी बच्चे इस गणित पार्क में दर्शाए गए मॉडलों से ज्ञान प्राप्त करें तो निश्चित रूप से उनकी गणित में रुचि जागृत होगी और जटिल धारणाएँ भी सरल लगें।

डॉ. ब्रह्मजीत रांगी
अतिरिक्त ज़िला उपायुक्त, फतेहाबाद

'श्रीनिवास रामानुजन गणित पार्क' को देखकर ऐसा नहीं लगता कि कहीं भी राजकीय स्कूल पीछे हैं। यह गणित पार्क बच्चों को गणित विषय सीखने- सिखाने की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा। इसमें दर्शाए गए विभिन्न मॉडल बच्चों को एक नई दिशा प्रदान करेंगे। गणित में इस प्रकार के वर्किंग मॉडल कम देखने को मिलते हैं।

-सुश्री सृष्टि गुप्ता, आईपीएस
एएसपी, ज़िला फतेहाबाद

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भूना, जिला फतेहाबाद में बनाया गया 'गणित पार्क' बच्चों को गणित में एक नई दिशा देगा। इसके लिए मैं गणित प्रवक्ता श्री राजकुमार का धन्यवाद करना चाहूँगा । उन्होंने गणित के प्रति बच्चों की जिज्ञासा को समझते हुए इस गणित पार्क के रूप में मूर्त रूप दिया जो कि सभी राजकीय विद्यालयों व जिला फतेहाबाद के लिए गर्व का विषय है। गणित प्रवक्ता ने गणित में नवाचार को एक नई दिशा दी है। गणित पार्क का निर्माण करवाने के लिए विद्यालय प्राचार्य श्री नरेश शर्मा जी ने आगे आकर जो मूलभूत सुविधाएँ प्रदान कीं व गणित को नए तरीके से सीखने की कला को बच्चों के सामने रखा, इसके लिए मैं प्राचार्य श्री नरेश शर्मा का भी आभार प्रकट करना चाहूँगा।

- दयानंद सिहाग
ज़िला शिक्षा अधिकारी, फतेहाबाद

श्रीनिवास रामानुजन गणित पार्क, राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भूना, जिला फतेहाबाद गणित में नवाचार को दर्शाता है। यह हरियाणा का एकमात्र ऐसा गणित पार्क है जो गणित के विभिन्न आयामों को सरल करके मूर्त रूप में समझाता है। मुझे यहाँ आकर ऐसा आभास हो रहा है कि जैसे हरियाणा के राजकीय स्कूल ने केवल पढ़ाई में बल्कि शिक्षा में नवाचार को भी बढ़ावा दे रहे हैं। यह पार्क बच्चों की गणित में रुचि बढ़ाने के लिए वास्तव में एक मील का पत्थर साबित होगा ।

- सुश्री सुरभि साहू
मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी, ज़िला- फतेहाबाद

शिक्षा अधिकारी फतेहाबाद श्री दयानंद सिहाग की अध्यक्षता में मुख्य-अतिथि के रूप में पहुँचे फतेहाबाद के अतिरिक्त जिला उपायुक्त डॉ. ब्रह्मजीत रांगी ने किया। गणित पार्क के मुख्य-द्वार पर कक्षा-10 के गणित

के मुख्य विषय विभिन्न प्रकार की रेखाएँ एवं उनके हल को मूर्त रूप दिया गया।

जैसे ही हम गणित पार्क के मुख्य द्वार को खोलेंगे तो यह डी के माध्यम से विभिन्न प्रकार के बनने वाले कोणों का ज्ञान कराएगा। उसके पश्चात इसमें बनाई गई विभिन्न आकृतियों, जो 1-डी से आरंभ होकर 3-डी तक जाती हैं, को समझने का मौका बच्चों को मिलता है। विभिन्न प्रकार की रेखाएँ, रेखाखंड व किरण का ज्ञान, तत्पश्चात् विभिन्न प्रकार के कोण, त्रिभुज के विभिन्न प्रकार, कोणों के आधार पर त्रिभुज को बाँटना, भुजाओं के आधार पर त्रिभुज को बाँटना दर्शाया गया है। इसके पश्चात चार भुजाओं की विभिन्न आकृतियों को उनके उत्तरोत्तर क्रम में लगाया गया है, जिन्हें देखकर बच्चे यह ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं कि विभिन्न प्रकार के चतुर्भुज, दैनिक जीवन में क्या कार्य करते हैं।

बच्चे पंचभुज, षट्भुज आदि का ज्ञान भी इस पार्क में प्राप्त करते हैं। वृत्त, उसके विभिन्न अंगों को मूर्त रूप में छूकर बच्चे ज्ञान ग्रहण कर सकते हैं। गणित पार्क में बच्चों के आकर्षण का केंद्र एंगल मैन भी है, जो विभिन्न प्रकार के कोणों का ज्ञान करवाता है तथा बच्चों को आसानी से खेल ही खेल में कोणों की जानकारी प्रदान करता है।

एक मुख्य विषय जो उत्तरोत्तर कक्षा में बच्चों के साथ समस्या उत्पन्न करता है, वह है, विभिन्न प्रकार की 3-डी आकृतियों का क्षेत्रफल ज्ञात करना। जिनमें उनके वक्र पृष्ठ, क्षेत्रफल व संपूर्ण पृष्ठ क्षेत्रफल में अंतर करना एक गंभीर समस्या के रूप में बच्चों के सामने हमेशा रहता है। इस विषय को भी यह श्रीनिवास रामानुजन पार्क हल करता है। बेलन, शंकु, गोला, अर्धगोला आदि के वक्र पृष्ठ व संपूर्ण पृष्ठ क्षेत्रफल को किस किस आकृति में अलग किया जा सकता है व कैसे किया जाता है, का

ज्ञान बच्चे अपने हाथों से आकृति के अलग-अलग टुकड़े करके व उनको जोड़कर सीखते हैं।

गणित पार्क के माध्यम से बच्चों को यह जानना कि अर्धगोले का संपूर्ण पृष्ठ क्षेत्रफल व वक्र पृष्ठ क्षेत्रफल अलग-अलग होता है तथा इन में अंतर कितना व कैसे होता है, बड़ा ही रुचिकर व ज्ञानवर्धक प्रतीत होता है। घन और घनाभ के विभिन्न तल को बच्चे अपने हाथों से छूकर, अलग-अलग करके इनके तल, कोणों, भुजाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं तथा यूलर फॉर्मूले का सत्यापन भी करते हैं। बच्चे इस गणित पार्क के माध्यम से कब रेखाएँ समांतर होती हैं तथा इस अवस्था में विभिन्न प्रकार के कोणों में क्या संबंध होता है, का ज्ञान भी मूर्त रूप में प्राप्त करते हैं। गणित का एक मुख्य उप विषय जो बच्चों को गणित से दूर ले जाता है, वह है-अपरिमेय संख्या को संख्या रेखा पर निरूपित करना, लेकिन इसे इस पार्क में बड़े ही आसान व मूर्त रूप से दर्शाया गया है।

वृत्त उसकी स्पर्श रेखाएँ, छेदक रेखाएँ, जीवा, त्रिज्या आदि का आपसी संबंध तथा वृत्त के संदर्भ में यह कैसे कार्य करती है, को भी इस गणित पार्क में मूर्त रूप दिया गया है। गणित पार्क की बाहरी दीवारों पर गणित के विभिन्न सूत्र, उनकी विभिन्न प्रकार की कक्षाओं में उपयोगिता तथा अनेकानेक कलाकृतियों के माध्यम से गणित की पजल्स तथा गणित के अनछुए पहलुओं को दर्शाया गया है, जो कि सोचना और देखना विद्यार्थी के लिए केवल कौतूहल ही नहीं, बल्कि गणित सीखने की जिज्ञासा भी उत्पन्न करता है।

इस पार्क की गणित में सहभागिता व बच्चों के लिए उपयोगिता को जानने तथा इसके विभिन्न मूर्त मॉडलों का निरीक्षण करने श्री अशोक कुमार गर्ग, निदेशक मौलिक शिक्षा विभाग, हरियाणा, डॉ. ब्रह्मजीत रांगी, अतिरिक्त उपायुक्त, फतेहाबाद, सुश्री सृष्टि गुप्ता आईपीएस, एएसपी, सुश्री सुरभि साहू, मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी, फतेहाबाद, फतेहाबाद, श्री दयानंद सिहाग, जिला शिक्षा अधिकारी, फतेहाबाद, श्री वेदप्रकाश दहिया, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी, फतेहाबाद, श्री रमेश कुमार, जिला गणित विशेषज्ञ, फतेहाबाद, श्री मुकेश कुमार, जिला साइंस विशेषज्ञ, फतेहाबाद। विभिन्न खंडों के खंड शिक्षा अधिकारी, जिला फतेहाबाद के विभिन्न स्कूलों के प्राचार्य व बच्चे पहुँच चुके हैं।

गणित प्रवक्ता
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भूना, जिला फतेहाबाद, हरियाणा

यह गणित पार्क अपनी तरह का एकमात्र ऐसा पार्क है जो भूना क्षेत्र व फतेहाबाद जिले को न केवल गणित के क्षेत्र में आगे ले जाएगा बल्कि यहाँ के बच्चों की गणित विषय में रुचि उत्पन्न करेगा। इस गणित पार्क को एक बेहतरीन वर्किंग मॉडल के रूप में विकसित करने के लिए मैंने व्यक्तिगत रूप से श्री राजकुमार, गणित प्राध्यापक को प्रोत्साहित किया एवं विद्यालय मुखिया होने के नाते इस पार्क को अपने सही स्वरूप तक पहुँचाने के लिए मार्ग में आने वाली हर बाधा को दूर करने का प्रयास किया। यदि यह पार्क भविष्य में विद्यार्थियों का मार्ग दर्शन करने में सक्षम होता है तो मैं अपने इस प्रयास को सार्थक समझूँगा

- नरेश शर्मा
प्राचार्य
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भूना
जिला- फतेहाबाद

कौन थे श्रीनिवास रामानुजन ?

इस गणित पार्क का नाम भारत के महान गणितज्ञ के नाम पर रखा गया है। वे भारत के ही नहीं विश्व के महानतम गणित विचारकों में एक हैं। मात्र 33 वर्ष की आयु में इन्होंने अपने अद्भुत और विलक्षण ज्ञान से पूरे विश्व को चमत्कृत कर दिया था। इनके जन्मदिन यानी 22 दिसंबर को 'राष्ट्रीय गणित दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

रामानुजन और इनके द्वारा किए गए अधिकांश कार्य अभी भी वैज्ञानिकों के लिए अबूझ पहेली बने हुए हैं। एक बहुत ही सामान्य परिवार में जन्म लेकर पूरे विश्व को आश्चर्यचकित करने की अपनी इस यात्रा में इन्होंने भारत को अपूर्व गौरव प्रदान किया। इनका वह पुराना रजिस्टर जिस पर वे अपने प्रमेय और सूत्रों को लिखा करते थे, 1976 में ट्रिनीटी कॉलेज के पुस्तकालय में मिला। करीब एक सौ पन्नों का यह रजिस्टर आज भी वैज्ञानिकों के लिए एक पहेली बना हुआ है। इस रजिस्टर को बाद में रामानुजन की नोट-बुक के नाम से जाना गया। मुंबई के टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान द्वारा इसका प्रकाशन भी किया गया है।

आरंभ में तो रामानुजन ने जब अपने किए गए शोधकार्य को इंग्लैंड में प्रोफेसर हार्डी के पास भेजा तो पहले उन्हें भी पूरा समझ में नहीं आया। जब उन्होंने अपने मित्र गणितज्ञों से सलाह ली तो वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि रामानुजन गणित के क्षेत्र में एक दुर्लभ व्यक्तित्व हैं और इनके द्वारा किए गए कार्य को ठीक से समझने और उसमें आगे शोध के लिए उन्हें इंग्लैंड आना चाहिए। अतः उन्होंने रामानुजन को कैंब्रिज आने के लिए आमंत्रित किया। वहाँ जाकर रामानुज ने प्रोफेसर हार्डी के साथ मिलकर कई शोध-कार्य किये।

26 अप्रैल, 1920 को मात्र 33 वर्ष की अवस्था में इनका देहांत हो गया। इनका असामयिक निधन गणित जगत के लिए अपूरणीय क्षति था। गणित-क्षेत्र में अपने अपूर्व योगदान के लिए ये सदैव याद रखे जायेंगे।

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो, इस अंक में प्रस्तुत हैं कुछ और शून्य व कम लागत से तैयार रुचिकर कक्षाकक्ष विज्ञान गतिविधियाँ व विज्ञान खिलौने। बेहद खुशी की बात है कि इस अंक के साथ ही 'खेल-खेल में विज्ञान' शृंखला के अंतर्गत शून्य/कम लागत की पाठ्यक्रम आधारित व मनोरंजक 209 विज्ञान गतिविधियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

1. गुड़हल के फूलों से लिटमस विलियन को तैयार करना-

कक्षा-7 में अम्लक्षारक और लवण पाठ के अंतर्गत लिटमस विलयन व लिटमस पेपर का जिक्र आया। लिटमस पेपर तो उनके दिया गया था, परन्तु उनकी उत्सुकता लिटमस विलयन प्रयोग करने में थी। विद्यार्थियों को पता लगा कि लिटमस विलियन एक प्रकार का अद्भुत रंग-परीक्षक होता है जो अम्लीय व क्षारीय द्रव को पहचानने में मदद करता है। उन्हें पता लगा कि गुड़हल के फूलों से लिटमस विलियन तैयार कर सकते हैं। विद्यालय में बहुत सारे गुड़हल के फूल लगे है। गुड़हल के फूलों से लिटमस विलियन को तैयार करने की जिम्मेदारी छात्रा प्रिया ने ली।

उसने बताया कि सबसे पहले कुछ गुड़हल के फूल लिये। ये आमतौर पर लाल रंग के होते हैं। एक कटोरे में गर्म पानी डाला, उसमें गुड़हल के फूल भी डाल दिए। गुड़हल के फूलों को पानी में 15-20 मिनट तक भीगा रहने दिया। इन भीगे हुए गुड़हल के फूलों को पीस लिया, पानी को निचोड़-छान लिया। इस लाल रंग के लिटमस द्रव को बोतल में भर लिया। विद्यालय में आकर तनु ने हाइड्रोक्लोरिक अम्ल व सोडियम हाइड्रोक्साइड को विज्ञान प्रयोगशाला से प्राप्त किया। अब उसने अपने इस लिटमस विलियन को उपयोग करके अम्लीय व क्षारीय द्रव की पहचान की। प्रयोग करके बताया कि जाँचें जाने वाले विलियन का रंग कैसा परिवर्तित हो रहा है? यदि वह लाल से नीले रंग में परिवर्तित होता है, तो द्रव अम्लीय है और यदि वह लाल से हरे रंग में परिवर्तित होता है, तो द्रव क्षारीय है। (बच्चों को बताया गया कि यह तरीका घरेलू है, वैज्ञानिक उपयोग के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त नहीं है।)

2. बोतल बनी फव्वारा-

बोतल का स्वचालित फव्वारा बनाने के लिए प्लास्टिक की बोतल लेते हैं। उसके नीचे एक सुराख कर लेते हैं। बोतल के ढक्कन में 10-12 बारीक-बारीक सुराख कर लेते हैं। बोतल के अंदर एक गुब्बारा लगा लेते हैं। उस गुब्बारे को फुलाकर बोतल के नीचे वाले छेद को अँगूठे से बंद कर देते हैं, जिससे वह गुब्बारा पिचक नहीं पाता। बोतल के मुँह से गुब्बारे में पानी भर देते हैं और बोतल का ढक्कन लगा देते हैं। जब नीचे वाले सुराख से अँगूठा उठाते हैं तो वायु-दबाव के कारण ढक्कन के सुराखों से फव्वारे की तरह पानी की धारायें निकलने लग जाती हैं, जो देर तक चलती हैं। बच्चों ने इसे साइंटिफिक खिलौने को बनाकर बहुत आनंद लिया।

3. नदियों झीलों के बनने को दर्शाती गतिविधि-

विद्यालय के खेल के मैदान को समतल करने की प्रक्रिया में मैदान में मिट्टी के बड़े-बड़े ढ़ेर लग गए हैं। वर्षा होने के कारण उन की सतह व ढ़लान पर ऐसी स्थितियों का निर्माण हुआ, जैसे सहायक नदियाँ नाले मिल कर नदी का निर्माण करते हैं। जब नदी में जल-प्रवाह का मात्रा में बढ़ोतरी होती है, तो नदी का जल अपनी राह ढूँढते हुए अपने नए-पुराने मार्गों को खोजता है और धरती पर नदियों का संचयन होता रहता है। किसी गहरी जगह पर संचयन झीलों का रूप बनता है। यह संचित जल व इन नदियों की लय और प्रवाह का मिलन करके नदी की धारा बनता है, जो आखिरकार उसका मुख्य प्रवाही रास्ता बन जाता है, जो समुद्र या झील में जाकर नदी का समाप्ति-स्थल बनाता है।

इस तरीके से विद्यार्थियों ने प्रकृति के नज़दीक जाकर शून्य लागत से जाना कि किस तरह बरसाती प्रवाह, सहायक नदियाँ, झीलें व नदियाँ बनती हैं व धरती पर जल का संचयन और संवहन होता रहता है, जिससे वे प्राकृतिक जीवन को सुगम बनाने में मदद करती हैं।

4. भूमिकटाव, भूस्खलन के कारण को जाना-

भूमि कटाव, एक प्रक्रिया है जिसमें भूमि की ऊपरी सतह से मिट्टी, मृदा का

नुकसान होता है। जल की अधिकता, भूमि पर बारिश या बर्फ की अधिकता भूमि कटाव का कारण बन जाती है। वायुमंडलीय परिवर्तन और अन्य मानव गतिविधियों (वनोन्मूलन आदि) भूमि कटाव का मुख्य कारण बनती हैं। बहुत तेज गिरती बारिश भी भूमि की ढलान में परिवर्तन कर सकती है जिससे भूमि कटाव हो सकता है।

इसी को समझने के लिए विद्यार्थियों ने विद्यालय के खेल मैदान में पड़े मिट्टी के बड़े-बड़े ढ़ेरों में से एक ढ़ेर पर किसी पौधे की छोटी-छोटी टहनियाँ तोड़कर उन्हें ढलान पर ऐसे लगाया जैसे वे पहाड़ की ढ़लान पर उगे वृक्ष हों। ढेर के ऊपर से जग द्वारा पानी डालकर देखा कि कट कर आने वाली मिट्टी की मात्रा पहले से कम थी। यानी जो पेड़ है, वे भूमि कटाव को रोकते हैं। इसी प्रकार पेड़ों व वनस्पति के अभाव में कमज़ोर होती पहाड़ी ढलानों का टूट कर नीचे सरकना यानी भूस्खलन को भी शून्य लागत गतिविधि द्वारा समझना। स्थानीय उपलब्ध साधन मिट्टी के टीले-नुमा ढेर को अवसर के रूप में प्रयोग किया गया।

5. कागज़ की कन्नी पर सिक्के को टिकाओ तो जानें-

एक कागज़ की कन्नी इतनी पतली होती है कि हम उस पर चाह कर भी एक सिक्के को नहीं रख सकते हैं। लेकिन इसके विपरीत यदि हम कागज़ को बीचो-बीच से अंग्रेज़ी के अक्षर वी के आकार में मोड़ें और उस वी आकृति पर सिक्का रख दें तो कागज़ को धीरे-धीरे खोलने पर हम देखते हैं कि पूरा खुल जाने के बाद भी सिक्का

नीचे नहीं गिरता। इस प्रकार कागज़ की किनारी के ऊपर सिक्का टिक गया। यह बड़ी मज़ेदार गतिविधि रही। विद्यार्थियों ने बहुत उत्साह से सीखा और वस्तु के द्रव्यमान-केंद्र को समझा।

अच्छा तो आदरणीय अध्यापक साथियो व प्रिय विद्यार्थियो, आगामी अंक में फिर से मिलते हैं, नई विज्ञान गतिविधियों के साथ।

साइंस मास्टर/ ईएसएचएम
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दामला
खंड-जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

युवा-पीढ़ी को पढ़ाना होगा नैतिकता का पाठ

इंद्रा बेनीवाल

आधुनिकता के दौर में बच्चे अपने शिष्टाचार एवं नैतिक मूल्यों को भूलते जा रहे हैं, जो हमारे जीवन की सबसे अहम चीजें हैं, जिनसे हमारे व्यक्तित्व और संस्कारों का पता चलता है और समाज में हमारी एक विशेष छवि निर्मित होती है। आज के युग में अगर युवा-पीढ़ी की बात करें तो वह सिर्फ और सिर्फ दिखावटी मुखौटे को ओढ़े हुए है। उसे न तो संस्कार और सभ्यता की फ़िक्र है और न ही ज्ञान है। वह तो बस अपनी निजी ज़िन्दगी में पूरी तल्लीनता से धुत है। वह न तो संस्कारों का ज्ञान लेना चाहती है, न ही उन्हें अपने जीवन में अपनाना चाहती है। वह अपने जीवन में नैतिकता और शिष्टाचार को भी स्थान नहीं देना चाहती, क्योंकि उसके पास इन चीजों के लिये समय ही नहीं है। उसे इन चीजों की कभी जरूरत भी महसूस नहीं होती। आज का युवा देख तो पश्चिमी देशों को रहा है और जी भारत में रहा है। विदेशों में 18 साल का युवा अपने पाँव पर खड़ा हो जाता है। उसे अपने माँ-बाप से कोई मदद की उम्मीद नहीं होती और न ही माँ-बाप पर निर्भर रहता है। यहाँ पर माँ-बाप सारी ज़िंदगी अपना व अपने रिश्तेदारों का भी ख़याल रखते हैं और अपने बच्चों का भी। माता-पिता यहाँ दोहरी मार झेलते हैं। इसी उधेड़-बुन में, उनकी ज़िंदगी बीत जाती है। यह किसका क़सूर मानें, ये सोचने का विषय है?

प्रत्येक घर में यही कहानी है। घर की ज़िम्मेदारी उठानेवाला व्यक्ति / बुज़ुर्ग असहाय महसूस करता है। किसी से कुछ कह भी नहीं सकता। यूँ कह सकते हैं, समाज में अपनी इज़्ज़त बनाते-बनाते 'भीतर मार हो रही है।' दूसरी तरफ़ देखा जाये तो ज्यादातर युवा सिर्फ इस वहम में जी रहे हैं कि इस आधुनिकता-भरे दौर में जो कुछ चल रहा है, बस यहीं तक ही जीवन है और यहीं सब-कुछ खत्म हो जाता है, न अब इसके आगे कुछ नया जानना है और न ही इसके पीछे के प्राचीनतम इतिहास को दोहराना है। बस उनकी समस्या यही है कि वह जिज्ञासु प्रवृत्ति को नहीं अपना रहे हैं और न ही वे कुछ जानने के लिये सीमाओं को पार करना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि इस आधुनिक दौर में जो कुछ जैसा चल रहा है वह पर्याप्त है और यही विशेष कारण है कि आज बड़ी तेजी से नैतिकता और शिष्टाचार के साथ-साथ संस्कार, संस्कृति व सभ्यता का पतन हो रहा है। जिस देश का विद्यार्थी नैतिक मूल्यों से दूर होगा, उस देश का कभी भी विकास नहीं हो सकता। दुख है कि नैतिकता हमारे जीवन से दूर होती जा रही है।

मुझे नहीं लगता कि आज की युवा पीढ़ी ही सिर्फ इसकी जिम्मेदार है। आज अगर युवाओं में नैतिकता व शिष्टाचार की कमी आ रही है तो उसका कारण सिर्फ और सिर्फ हम ही हैं। आख़िर क्यों हम उनमें अच्छे संस्कार, नैतिकता और शिष्टाचार नहीं भर पा रहे? यह एक चिंताजनक विषय है, बल्कि बच्चों का अनैतिक होना हमारी कमज़ोरी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जब हम छोटे थे तब हमारे बचपन में बुज़ुर्ग दादा-दादी, नाना-नानी हमें अनेक तरह की शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाया करते थे और हमें उन कहानियों के अनुसार आचरण करने को कहा जाता था। जब बच्चा छोटा होता है तो आप उसे जिस प्रकार की शिक्षा व संस्कार देंगे, वह उसी राह पर चलेगा। अगर बाल्यावस्था में बच्चे को यह सिखाया जाए कि चोरी करना बुरी बात है तो वह चोरी जैसी हरकत करने से पहले अनेक बार सोचेगा। छोटी उम्र में बच्चों को अच्छे संस्कार देने में माता-पिता, दादा-दादी व बड़े-बुज़ुर्गों का काफी योगदान होता है। हमें बच्चों के लिए समय निकालना होगा। उनके साथ मित्रवत व्यवहार करते हुए उनकी बात सुननी होगी। यह जानना होगा कि उनकी संगति किस प्रकार के बच्चों से है। जरूरत पड़ने पर उनकी काउंसलिंग करनी पड़ेगी।

हम नैतिकता को अपने से बाहर खोजते रहते हैं लेकिन वह तो हमारे भीतर समाई हुई है। यदि हम सब यह समझ लेंगे तो हमें इसे बाहर खोजने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। सभी धर्मग्रंथों का मुख्य उद्देश्य मनुष्य के अंदर नैतिक गुणों का विकास करना है ताकि वह मानवता और खुद को सही राह पर ले जा सके। एक बच्चे को बचपन से ही विद्यालय व परिवार द्वारा नैतिक मूल्यों से अवगत कराना चाहिये। जैसे-जैसे उसकी उम्र व शिक्षा का स्तर बढ़ता जाता है, उसके नैतिक मूल्यों में विस्तार भी अवश्य होगा। ये नैतिक मूल्य उसे सिखाते हैं कि उसे समाज में, बड़ों के साथ, अपने मित्रों के साथ व दूसरे लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए। हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी भी बनती है कि समय रहते बच्चों को अच्छे संस्कारों की शिक्षा दी जाए ताकि हमारा भविष्य उज्ज्वल हो और राष्ट्र एक बार फिर से विश्वगुरु के सम्मान का अधिकारी बने।

उपनिदेशक, मौलिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

हरियाली तीज

हल्की बूँदों की फुहार है,
ये सावन की बहार है।

सखियाँ संग झूलन को आई,
आज हरियाली तीज त्यौहार है।

झूम उठे दिल झूम बराबर,
गीतों के तराने और सावन के मल्हार हैं।

यह पावन पर्व है हरियाली तीज का,
इस दिन झूलों की लगती खूब कतार है।

आया तीज का त्यौहार सखियाँ भी तैयार हैं,
मेहँदी हाथों में रचाई, किये सोलह शृंगार हैं।

हरी चूड़ी खन-खन है करती,
पायल भी छम-छम है बजती।

बिंदिया की चमक अपार है,
आज हरियाली तीज त्यौहार है।

मंदिर में दर्शन को जातीं,
शिव पार्वती से गुहार लगातीं।

होगा अमर सुहाग,
आज हरियाली तीज त्यौहार है।

-अतुल पाठक 'धैर्य'
जनपद-हाथरस(उप्र)

2023

अगस्त माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

6 अगस्त- मैत्री दिवस
9 अगस्त- क्रांति दिवस (भारत छोड़ो आन्दोलन दिवस)
12 अगस्त- अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस
13 अगस्त- अंतरराष्ट्रीय वाम हाथ दिवस
15 अगस्त- स्वतंत्रता दिवस
19 अगस्त- हरियाली तीज
20 अगस्त- अक्षय ऊर्जा दिवस
26 अगस्त- मदर टेरेसा जन्मदिवस
29 अगस्त- मेजर ध्यानचंद सिंह जन्म-दिवस
30 अगस्त- रक्षाबंधन

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Revamping Education with Vocational Skills

Mahabir Parsad (HCS)

Education for students in the 21st century has altogether been gaining new meanings and has been adding new leaves of broader concepts to its pages. It is no more about just collecting knowledge on already existing facts, compiling them into memory and presenting them on answer scripts.

21st century education is a lot more than that. The main function that education should ideally cater to in modern times, is the all-round development of individual and nation. It is about giving students the right skills they need to succeed in this novel, evolving, complex world and helping them to practice those skills and grow confidence to face head on, the pressures and demands of modern-day challenges.

Unfortunately, there is a large chunk of the unemployed population consisting of highly educated youth who fail to find employment because of lack of skills, and skilled individuals who lack eligibility because of lack of knowledge. In the coming years, our learners in school and higher education system will need to have all the more exposure to vocational education. It is supremely important to overcome the social status hierarchy associated with vocational education and its integration into the mainstream.

NEP-2020 proposes the revision and revamping of all aspects of education, including the educational structure, to create a new system which is aligned with the aspirational goals of 21st century students.

Vocational, or skills-based education

is gaining the light, with many employers expecting new employees to have all the practical skills they need to start work and also for those who have to support their families immediately after senior secondary education.

SCERT has been striving towards its part of the aim by incorporating the related necessary material, like courses aligned with NSQF in the modules for training of 11000 teachers via MTs. At school levels, it is crucial to ensure that the vocational learning is well included in the curriculum through pre-vocational learnings for students of classes 6-8 and full vocational courses for students of classes 9-12. Formulating new plans for skilling students based on their geographic as well as interest-specific inclinations, for instance- in agriculture, handicrafts, terrain-specific jobs etc. is going to be a significant move towards economic and inclusive growth.

Skilling our students in the right way and the right direction to their efficient future is going to be a paradigm effort towards the achievement of a self-sufficient nation with an empowered youth.

Director
SCERT Haryana, Gurugram

Hard Rain

This time the Monsoon rain,
Was not a boon but a bane.
Clad in a cloak of clouds, dark,
The Rain Gods unleashed wrath.

The Earth's jury, Man is guilty proclaimed.
Hammered out punishment as incessant rain.
Angry thunder clouds struck a lightening warning.
Let no one dare to take lightly, global warming.

Dangling like demons from hell were electric poles,
Thunder bolts from above and below electric jolts.
Swollen rivers breached banks, Dams overflowed.
People perched on buildings and had no place to go.

Man struggled to survive with prices skyrocketing,
Markets burning and transformers short circuiting.
Fire on the water, screams and smoke in the air,
No power for days, animals cowering for cover.

Cars and carcasses afloat in muddy waters,
In the streets swarmed crocodiles and alligators.
Gurgling drains and overflowing sewage,
Welcome to the so called 'civilized' new age.

Traffic jam nightmares to crowded holiday destinations,
Stranded on broken roads, mountains of abomination.
Untimely drowning of crops and godown stores.
We shudder in fear as reports say there's more.

Water everywhere yet in short supply,
Man's needs still nature must comply.
Devastating deluge, floods and landslides,
From nature's fury man can no longer hide.

Damned dams of troubles are now bursting forth,
Tired of holding in too long man's greedy girth.
For days tears of hard Rain pelted mans naked skin,
Yet some are still too thick for anything to seep in.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Maintain Stability in Your Behaviour

Dr. Himanshu Garg

Generally, we all behave according to our status. But actually, the behaviour of a person shows his real status. Our status, our designation or our level can fluctuate from time to time. Very few of us are able to stabilize the behaviour outside as well as inside. The persons who succeeds in maintaining their behaviour, rise in each and every step of life. So we should maintain our behaviour to show our real status.

A blind girl was so depressed. She hated herself because of her blindness. Not only did she hate herself but also she hated everyone around her, except her boyfriend. She loved him very much. Her boyfriend was always there for her. One day, someone donated a pair of eyes to the girl. Now she could see everything. Her boyfriend proposed to her. He wanted to marry her. But the girl was shocked when she saw her boyfriend because her boyfriend was blind too. So she refused to marry him. The boyfriend moved away from her life by leaving a letter on her table. He wrote only one line in that letter. The line was-' Please take care of my eyes dear'. The girl lost her true-life partner. This is how a man changes when his status changes.

True love is rare. Only the luckiest person gets true love in this world and that person is the unluckiest who loses his true love after getting it. She lost her true love as well as respect because of her unstable behaviour. The person, who has stablity in his behaviour, can face all the odds and evens of life easily. Stabilize your behaviour to upgrade your status.

Asstt. Professor,
Govt. College for Women, Jind

Parenting Through Meaningful Conversations

Gulshan Walia

My son (almost 18 yrs old) has been missing school on and off. He gets up in the morning and says "I don't want to go to school, anyway they are not doing anything useful". Its been a pattern for about a month and I am unhappy about it.

I thought of putting my coaching skills to work on this problem. After all what good are my skills if I can't use them for my and my family's benefit.

I started with Inquiry. I asked him a simple question "Why do you think you are missing school?"

He replied "Sometimes I am sick, but mostly I am bunking". The truth was out with the first question.

Then followed the excuse that going to school was of no use. (His school is very good, and the teachers are amazing)

And further excuses like "My friends don't see any value in going to school' - He made attempts to externalise the problem. It was not about him....The "Everyone does it, so I do it" argument"

I pressed further. I said you have made a commitment to go to school, and you have to follow-through and show up. Bunking school is harming your self -discipline. Besides academics you also have to learn important life skills like self-discipline.

He agreed with me, so I had Awareness and Acceptance. The most important part now is Action. We have a pact that he won't miss school unnecessarily.

It remains to be seen how much actual behaviour change will occur. Just as we have to wait and watch our coachees for behaviour change.

I believe I might get a better response with this approach, than the other choice available to me - Tell him to stop bunking and attend school. That would be more fear based (there are definitely situations where fear is needed to influence). In this situation I felt a softer approach might help.

We can draw parallels from this to our work. Just a pause to CHOOSE which approach to use when we have problems with our subordinates. Maybe that pause could change the behaviour we evoke in them.

Leadership Coach &
HR Consultant
Bengaluru
Karnataka, India

The Sweetest Surprise

One day I gifted a sweet surprise,
My boy looked into his puppy's eyes.
And till then how little did I realise,
The value of precious feelings that arise.

For long he pestered me for a dog,
But I wasn't ready to go the whole hog.
Till one day he threw a terrible tantrum,
And I was in dreadful parenting doldrums.

Held hostage to his emotional blackmail,
My relation ship and nowhere left to sail.
But right into his delightful wishes,
Giving in to flying pigs and talking horses.

So a trip to the pet shop I took,
Puppy had me in just one look.
Sweet warm eyes and moist nose,
Left me melting from head to toe.

I bought a little basket, as the story goes.
With some blue ribbons and bows,
Placed it at his bedside as he woke,
It wasn't words but his eyes that spoke.

He thanked me with tears of happiness,
As that bundle of fur, he fondly caressed.
We welcomed in our home the lab, Orys,
With his angelic presence we are now blessed.

While he zealously guards over us all,
A big boy now from one so small.
We all grew to love this cute surprise,
But sweetest was the love in my son's eyes.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Magical Monsoon Adventures

Once upon a time in a small village nestled amidst the lush green hills of India, lived two curious and adventurous children named Raj and Meera. The village eagerly awaited the arrival of the monsoon rain, which was not just a natural phenomenon, but a time of excitement and wonder.

As the days grew hotter, Raj and Meera could feel the anticipation building up in the village. The villagers prepared by repairing their thatched roofs and planting special monsoon crops. Everyone knew that the rain brought life to the land, and they couldn't wait for it to arrive.

One morning, as the sun rose behind the hills, a distant rumble echoed through the village. Raj and Meera exchanged excited glances. "It's coming!" Raj exclaimed, his eyes lighting up. The siblings rushed outside and looked up at the sky. Dark clouds were gathering, and the air felt electric with anticipation.

As the first drops of rain fell, Raj and Meera spread their arms wide, letting the water touch their skin. The earthy smell of wet soil filled the air, and the two siblings giggled with joy. "It's like nature's shower!" Meera exclaimed.

But the monsoon rain was not just about getting wet; it was also about exploring the magic it brought. The next day, Raj and Meera set off on an adventure. Armed with colorful umbrellas and rubber boots, they trekked through the now-muddy paths leading to the forest.

Inside the forest, everything seemed to come alive. The leaves glistened with raindrops, and the animals rustled through the undergrowth. The children marveled at the streams that had turned into gushing rivers and the flowers that seemed to bloom overnight. They even spotted a rainbow arching across the sky, a colorful bridge between earth and sky.

One day, as the rain poured down heavily, Raj and Meera decided to explore the old, abandoned house at the edge of the village. The rain drummed a mysterious beat on the roof as they pushed open the creaky door. Inside, they discovered an attic filled with dusty old books and artifacts. Among the treasures, they found an ancient map that seemed to lead to a hidden waterfall deep within the forest.

With their curiosity piqued, Raj and Meera followed the map's directions.

They navigated through thick undergrowth, crossed narrow bridges over babbling brooks, and climbed rocky hills. Finally, after hours of adventure, they reached the hidden waterfall. The sight was breathtaking—water cascading down from great heights into a pool of crystal-clear water.

The children splashed and played in the pool, their laughter blending with the sound of the waterfall. They realized that this magical place was their secret treasure, a gift from the monsoon rain. They promised to keep it a secret, a place only for them to enjoy.

As the monsoon continued, the village transformed. The fields that were once dry and barren turned into a sea of green. The rivers flowed with renewed vigor, carrying life to every corner of the land. The villagers danced and celebrated, expressing their gratitude for the rain that brought prosperity.

One evening, as the rain pitter-pattered on the windows, Raj and Meera sat by the fire in their cozy home. They looked at the old map that had brought them to the hidden waterfall. "You know," Raj said with a smile, "the monsoon rain doesn't just water the land. It waters our hearts with joy and wonder."

Meera nodded in agreement. "And it teaches us to appreciate the beauty that surrounds us."

As the monsoon rain continued to bless the village, Raj and Meera never stopped exploring and appreciating the magic it brought. Each raindrop was a reminder of the wonders of nature and the importance of living in harmony with it.

And so, in that small village nestled amidst the hills, the monsoon rain continued to be a time of excitement, adventure, and most importantly, a time to embrace the beauty of the world around them.

- Sourced from Net

Monsoon Diseases in India
CAUSES, SYMPTOMS, AND PREVENTION

Monsoon season brings relief from the scorching heat and is a much-awaited respite from the sweltering summer heat. However, along with the relief it brings, the monsoon also ushers in a host of health concerns. The increased humidity, stagnant water, and favorable conditions for the growth of microorganisms can lead to a surge in various diseases. This article delves into the most common monsoon-related illnesses in India, their causes, symptoms, and preventive measures.

1. Malaria:

Malaria is a mosquito-borne disease caused by the Plasmodium parasite. The monsoon season provides breeding grounds for mosquitoes due to stagnant water. Symptoms include fever, chills, headache, and muscle pain. Prevention involves using mosquito nets, repellents, and eliminating stagnant water around living areas.

2. Dengue Fever:

Dengue is transmitted by Aedes mosquitoes breeding in stored water. Symptoms include high fever, severe joint and muscle pain, skin rash, and in severe cases, hemorrhage. Preventive measures include maintaining clean surroundings, using mosquito nets, and wearing protective clothing.

3. Chikungunya:

Similar to dengue, chikungunya is spread by Aedes mosquitoes.

Symptoms include fever, joint pain, headache, and rash. Precautions involve preventing mosquito breeding sites, using mosquito repellents, and wearing protective clothing.

4. Leptospirosis:

Leptospirosis is a bacterial infection spread through contaminated water. During the monsoon, floods and waterlogging can increase the risk. Symptoms include high fever, severe headache, muscle pain, and vomiting. Protective measures include avoiding wading through contaminated water and wearing protective footwear.

5. Typhoid:

Typhoid is caused by the Salmonella bacteria and is often waterborne. Contaminated water and food can lead to its transmission. Symptoms include prolonged fever, weakness, stomach pain, and loss of appetite. Preventive steps include consuming clean and well-cooked food and drinking purified water.

6. Gastrointestinal Infections:

Bacterial infections causing diarrhea and vomiting are common during the monsoon due to contaminated food and water. Symptoms include stomach cramps, dehydration, and fever. Maintaining hygiene, drinking clean water, and consuming freshly cooked food can reduce the risk.

7. Respiratory Infections:

Increased humidity during the monsoon can exacerbate respiratory conditions like asthma and allergies. Infections like the common cold and flu are also more prevalent. Symptoms include coughing, sneezing, congestion, and fever. Practicing good hygiene, staying hydrated, and avoiding crowded places can help prevent these infections.

8. Fungal Infections:

Fungal infections like ringworm and athlete's foot thrive in humid conditions. These infections affect the skin and nails, causing itching, redness, and discomfort. Wearing clean, dry clothes, maintaining personal hygiene, and using antifungal treatments can prevent such infections.

9. Viral Fever:

Monsoon weather provides an environment conducive to the spread of viral infections. Symptoms include high fever, fatigue, body aches, and sometimes respiratory symptoms. Frequent handwashing, avoiding close contact with infected individuals, and staying hydrated can help prevent viral fever.

10. Conjunctivitis:

Conjunctivitis, or "pink eye," is an inflammation of the eye's outermost layer. It can be caused by viruses or bacteria. Symptoms include redness, itching, watering of the eyes, and discharge. Preventive measures involve maintaining eye hygiene, avoiding touching the eyes, and not sharing personal items like towels.

Conclusion:

As the monsoon season arrives, it brings with it a heightened risk of various diseases due to increased humidity and the proliferation of disease vectors. Awareness, hygiene, and timely preventive measures are crucial to safeguarding public health. By following simple precautions and maintaining a clean environment, individuals can enjoy the monsoon while minimizing the risk of falling prey to these common monsoon diseases in India.

- Sourced from Net

Exploring the Latest Career Choices for School Graduates After 12th

The transition from high school to higher education and eventually into the professional world is a significant phase in every individual's life. With rapid advancements in technology, changes in industry trends, and a globalized job market, the landscape of career choices for school graduates after the 12th grade has expanded significantly. This article delves into the latest and emerging career options available to school graduates, providing insights into each field's requirements, prospects, and potential challenges.

1. Data Science and Analytics

Data science has emerged as one of the most sought-after career paths in recent years. In a world driven by data, organizations across industries are keen to gather insights from massive datasets. Data scientists and analysts play a crucial role in this process by extracting valuable information, identifying trends, and making data-driven decisions.

Requirements: Pursuing a career in data science usually requires a background in mathematics, statistics, or computer science. A bachelor's degree in these fields or a related discipline is often the starting point. Additional certifications in data science tools and programming languages (such as Python or R) can enhance your credentials.

Prospects: The demand for data scientists and analysts continues to surge across sectors like finance, healthcare, marketing, and e-commerce. These professionals are well-compensated and often have opportunities for remote work, making it an attractive choice for many school graduates.

Challenges: Data science can be intellectually demanding, requiring proficiency in programming and a solid understanding of complex statistical concepts. The field is also rapidly evolving, necessitating continuous learning to stay updated with the latest tools and techniques.

2. Artificial Intelligence and Machine Learning

Artificial Intelligence (AI) and Machine Learning (ML) are transforming industries by enabling machines to learn from data and perform tasks that previously required human intelligence. From self-driving cars to personalized recommendations on streaming platforms, AI and ML are ubiquitous.

Requirements: A foundation in mathematics, computer science, and statistics is crucial for a career in AI and ML.

Many professionals in this field possess advanced degrees (master's or Ph.D.), although some roles may be attainable with a bachelor's degree.

Prospects: The AI and ML job market is booming, with opportunities in research, development, and implementation across sectors like healthcare, finance, and entertainment. Professionals in this field often work on cutting-edge technologies, making it an intellectually stimulating choice.

Challenges: AI and ML are intricate fields that require a deep understanding of algorithms, data preprocessing, and model evaluation. The pace of innovation can be challenging to keep up with, and ethical considerations surrounding AI use are also critical.

3. Cybersecurity

As technology continues to evolve, so do the threats to digital security. Cybersecurity professionals are responsible for safeguarding sensitive information and digital infrastructure from cyberattacks.

Requirements: A background in computer science, information technology, or a related field is common for entering the cybersecurity domain. Many roles may require certifications like Certified Information Systems Security Professional (CISSP) or Certified Ethical Hacker (CEH).

Prospects: With the increasing frequency and severity of cyberattacks, the demand for cybersecurity experts is soaring. Industries ranging from finance to healthcare to government agencies are constantly seeking skilled professionals to protect their digital assets.

Challenges: Cybersecurity is a high-stakes field that demands constant vigilance and adaptability. Staying ahead of cybercriminals requires staying updated on the latest threats and defensive strategies.

4. Environmental Science and Sustainability

As concerns about climate change and environmental degradation grow, the field of environmental science and sustainability is gaining prominence. Professionals in this field work towards finding solutions to complex environmental issues.

Requirements: A background in environmental science, biology, chemistry, or related fields is common for this career path. Bachelor's and master's degrees are often required, with some roles demanding specialized training.

Prospects: As societies worldwide emphasize sustainability, opportunities for environmental scientists are expanding. Roles can vary from conducting research on renewable energy sources to designing sustainable urban development plans.

Challenges: Addressing environmental challenges requires interdisciplinary collaboration and a deep understanding of complex natural systems. The field's dynamic nature also means that professionals need to adapt to changing environmental policies and technologies.

5. Digital Marketing and Social Media Management

In an era where digital presence is crucial for businesses, digital marketing and social media management have become essential components of a company's success.

Requirements: A degree in marketing, communications, or a related field can provide a strong foundation for a career in digital marketing. However, practical skills and familiarity with various digital platforms are equally important.

Prospects: With the rise of online commerce and social media, the demand for digital marketers and social media managers is on the rise. Professionals in this field often have the flexibility to work remotely and can find roles in various industries.

Challenges: The digital marketing landscape is highly competitive and constantly evolving. Keeping up with platform algorithm changes, consumer trends, and creative content production can be demanding.

6. Content Creation and Influencer Marketing

The advent of social media platforms and online content platforms has given rise to a new breed of professionals known as content creators and influencers. These individuals generate various forms of content, from videos to blogs, and collaborate with brands for influencer marketing campaigns.

Requirements: There are no strict educational prerequisites for becoming a content creator or influencer. Creativity, communication skills, and a deep understanding of the target audience are essential.

Prospects: As digital content consumption continues to rise, opportunities for content creators and influencers are growing. Successful individuals in this field can monetize their platforms through sponsorships, advertisements, and merchandise.

Challenges: Building a substantial and engaged audience takes time and consistent effort. The income in this field can be unpredictable, making financial planning a challenge.

7. Health and Wellness Industry

The health and wellness industry has expanded beyond traditional healthcare, encompassing fields like fitness, nutrition, mental health, and holistic healing.

Requirements: The educational path varies widely in this industry. Becoming a fitness trainer might require certification courses, while becoming a nutritionist might involve a degree in nutrition science.

Prospects: The emphasis on well-being has led to increased demand for professionals in this industry. From personal trainers to wellness coaches to mental health counselors, various roles offer the chance to make a positive impact on individuals' lives.

Challenges: Navigating the health and wellness industry requires a commitment to ongoing education and staying updated on the latest research and trends. Additionally, building trust and credibility with clients is crucial.

8. E-Commerce and Entrepreneurship

The rise of online marketplaces and the ease of starting an online business have led to a surge in e-commerce and entrepreneurship opportunities.

Requirements: While there are no strict academic

requirements for starting an e-commerce business, a solid understanding of business principles, marketing, and customer behavior can be advantageous.

Prospects: E-commerce allows individuals to reach a global audience and operate businesses with lower overhead costs compared to traditional brick-and-mortar stores. Entrepreneurship, whether in e-commerce or other sectors, offers the freedom to pursue one's vision.

Challenges: E-commerce requires navigating digital marketing, supply chain management, and customer service. Entrepreneurship involves risk, uncertainty, and the need for resilience in the face of failures.

9. Renewable Energy and Green Technology

With the increasing focus on sustainable energy sources and environmentally friendly technologies, the renewable energy and green technology sectors are booming.

Requirements: A background in engineering, environmental science, or related fields is common for roles in this sector. Some positions may require specialized degrees or certifications in renewable energy technologies.

Prospects: The push for clean energy and green solutions has led to a surge in job opportunities in renewable energy companies, research institutions, and government agencies.

Challenges: Developing and implementing renewable energy technologies require overcoming technical, regulatory, and financial hurdles. Staying at the forefront of rapidly evolving green technologies is essential.

Conclusion

The career landscape for school graduates after the 12th grade has expanded significantly, offering a diverse range of opportunities across various industries. As technology continues to reshape the world and societal priorities evolve, new and exciting career paths emerge. Each of these career choices comes with its own set of requirements, prospects, and challenges. It's crucial for school graduates to carefully consider their interests, strengths, and aspirations as they embark on this journey of choosing a career that aligns with their passions and goals. By staying informed, seeking guidance, and remaining open to learning, today's school graduates can position themselves for success in the ever-changing professional landscape.

\- **Sourced from Net**

The Significance of Indian Independence Day on August 15th

Every year, on the 15th of August, India reverberates with a sense of pride, unity, and patriotism as the nation celebrates its Independence Day. This day holds immense historical, cultural, and emotional significance for every Indian citizen, marking the end of a long and arduous struggle for freedom from colonial rule. The journey to independence was fraught with sacrifices, determination, and unwavering resolve, making August 15th a day of remembrance, celebration, and reflection.

Historical Context

The story of Indian Independence is one of resilience and perseverance against oppressive colonial rule. For nearly two centuries, India was under British dominion, enduring economic exploitation, cultural suppression, and political subjugation. The turning point came in the early 20th century when leaders like Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru, Sardar Patel, and others mobilized masses through non-violent protests, civil disobedience, and mass movements. These efforts culminated in a united struggle for freedom, shaking the very foundation of British rule.

Celebrating Freedom and Unity

Independence Day is not just a

commemoration of a historical event; it's an embodiment of the unity, diversity, and resilience that define India. On this day, people from various walks of life, irrespective of their caste, creed, or background, come together to celebrate the shared values of freedom, democracy, and nationhood. The tricolor of the Indian flag, saffron symbolizing courage, white representing peace, and green representing growth, proudly waves across the nation as a symbol of unity in diversity.

Reflection and Gratitude

August 15th is also a day of reflection—a time to remember and honor the countless individuals who sacrificed their lives for the cause of independence. From the leaders who inspired movements to the ordinary citizens who participated in protests, each contribution played a pivotal role in the struggle. Independence Day serves as a reminder of the sacrifices made by these brave souls, who believed in the idea of a free India and worked relentlessly towards achieving it.

Renewed Commitment to Values

As India celebrates its independence each year, it is also an opportunity to recommit to the values that the nation was founded upon. Democracy, secularism, and social justice are principles that the country strives to uphold. Independence Day encourages citizens to reflect on how far the nation has come and how much more there is to achieve in terms of equitable development, eradication of poverty, and ensuring fundamental rights for all.

Educational Significance

For the younger generation, Independence Day is not just a public holiday; it's an essential part of their education. Schools, colleges, and educational institutions across the nation organize flag hoisting ceremonies, cultural events, and patriotic song performances. These activities not only instill a sense of national pride but also educate students about the sacrifices made by their forebearers. The stories of the freedom struggle serve as valuable lessons in courage, determination, and the power of unity.

Showcasing Cultural Diversity

India's cultural diversity is one of its defining features, and Independence Day celebrations provide a platform to showcase this rich tapestry of traditions, languages, and arts. From vibrant parades to traditional dance performances, the day is an opportunity for various states and regions to exhibit their distinct cultural heritage. This display of diversity underscores the unity that binds the nation together.

Looking Ahead

While Independence Day commemorates the past, it also sets the tone for the future. The nation takes stock of its achievements and challenges, reflecting on how it can continue progressing while staying true to its ideals. It's a day when leaders, both political and societal, articulate their visions for a better India, emphasizing unity, social justice, and inclusive development.

Conclusion

Indian Independence Day, celebrated on the 15th of August, is not just a date on the calendar; it is a day etched in history and emotion. It symbolizes the triumph of the human spirit against oppression and injustice. As the tricolor flag flutters in the breeze and the national anthem resonates in the hearts of millions, it's a reminder that freedom is a privilege that comes with responsibilities. The significance of Independence Day lies not only in remembering the struggles of the past but also in pledging to uphold the values and aspirations for which the nation was founded.

-Sourced from Net

Celebrating the Vibrant Teej Festival in Haryana: A Cultural Extravaganza

Amidst the vibrant tapestry of India's diverse festivals, Teej stands as a cultural gem, celebrated with fervor and joy in various states. One of the regions where this festival holds special significance is Haryana. The Teej festival, a blend of traditions, rituals, and festivities, not only showcases the state's rich cultural heritage but also embodies the spirit of joy, unity, and devotion among its people.

The Essence of Teej Festival

Teej is celebrated with gusto in Haryana, marking the advent of the monsoon season. The festival typically falls in the Hindu month of Shravan (July to August) and is dedicated to the goddess Parvati. It is celebrated by married women, who pray for the well-being and longevity of their husbands, while unmarried women seek blessings for finding loving and worthy life partners.

Rituals and Traditions

The celebrations of Teej in Haryana involve a series of rituals and customs that add to the festival's cultural significance. Women often fast on this day, refraining from consuming food and water as an act of devotion. The fast is broken only after offering prayers to the moon.

One of the most visually captivating aspects of Teej is the traditional attire donned by women. They dress in vibrant and intricate traditional outfits, often adorning themselves with exquisite jewelry. The swaying of colorful lehengas and the tinkling of bangles create a mesmerizing sight during the festivities.

Swings and Singing

Swings, or 'jhoolas,' are an integral part of Teej celebrations in Haryana. Women and young girls gather around intricately decorated swings, often hung from trees or makeshift frames. Swinging is not only a playful activity but also a cultural tradition symbolizing joy and freedom. Songs, often accompanied by dholak (a traditional drum) and other mu-

sical instruments, fill the air as women sing and dance, reveling in the festive spirit.

Mehndi and Creativity

Mehndi, or henna application, is a central element of Teej celebrations. Women adorn their hands and feet with intricate mehndi designs, showcasing their artistic skills. This practice not only adds to the festive charm but also provides an opportunity for creativity and social bonding among women.

Teej Processions

Teej processions are a highlight of the festival, showcasing the grandeur of Haryana's cultural heritage. Elaborately decorated idols of goddess Parvati are carried in processions, accompanied by traditional music, dance, and enthusiastic participants. The processions wind through the streets, offering a visual spectacle that draws both locals and tourists.

Traditional Cuisine

Food plays a significant role in any Indian festival, and Teej is no exception. Special dishes are prepared for the occasion, often reflecting the monsoon season's flavors. Ghewar, a sweet dish made from deep-fried batter soaked in sugar syrup, is a quintessential Teej delicacy. Families and communities come together to relish these traditional treats, strengthening social bonds.

Cultural Heritage and Unity

The Teej festival is not just about rituals and festivities; it's a celebration of Haryana's cultural heritage and the unity of its people. It provides a platform for communities to come together, irrespective of social and economic backgrounds. The festival's shared celebrations foster a sense of belonging and unity among the people of Haryana.

Modern Interpretations

While Teej's core essence remains unchanged, modern times have seen some adaptations to its celebration. Women now engage in Teej melas (fairs), where they can indulge in shopping, enjoy various forms of entertainment, and participate in contests. These melas have become vibrant hubs of activity, merging tradition with modernity.

The Relevance of Teej Today

In a rapidly changing world, the significance of festivals like Teej holds paramount importance. These celebrations offer a glimpse into the past, connecting communities with their roots and traditions. Teej, with its emphasis on devotion, family, and community, provides a counterbalance to the fast-paced modern lifestyle, reminding people of the values that bind them together.

Conclusion

Teej festival in Haryana is not just a series of rituals; it's a cultural extravaganza that encapsulates the spirit of joy, unity, and devotion. The celebrations bring to life the state's rich heritage and traditions, fostering a sense of togetherness among its people. As women swing on colorfuljhoolas, sing traditional songs, and create intricate mehndi designs, they engage in a vibrant tapestry of festivities that have been handed down through generations. In a world that often seems divided, the Teej festival stands as a testament to the power of culture to unite and celebrate life's shared experiences.

- Sourced from Net

आदरणीय संपादक जी!

'शिक्षा सारथी' के जुलाई एनएसएस विशेषांक में प्रकाशित लेख बहुत शानदार थे, जिन्हें पढ़कर एनएसएस के द्वारा व्यक्तित्व विकास करने की विस्तार से जानकारी मिली। एनएसएस केवल साफ- सफाई व सामान्य शिविर लगाने तक सीमित न होकर सेवा, संस्कार, सामाजिकता, सजगता व सामूहिकता की भावना के साथ व्यक्तित्व विकास करने की अनेक गतिविधियों का प्रवेश द्वार है। विभाग द्वारा स्कूली छात्रों के लिए राष्ट्रीय एकता शिविर व साहसिक शिविरों के आयोजन की शुरुआत अत्यंत सराहनीय है, जिनमें भागीदारी कर स्वयंसेवक निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे। एनएसएस के शिविरों में भागीदारी से मिलने वाला अनुभव जीवन भर याद रहता है। लेख पढ़ने के बाद मेरे जैसे अनेक छात्र एनएसएस से जुड़कर, इनकी गतिविधियों में भागीदारी कर, आयोजित होने वाले विशेष शिविरों का अनुभव लेकर स्वयं को व अपने संस्थान को धन्य करते हुए देश का सम्मानित नागरिक बनाना चाहेंगे। संपादन मंडल का बहुत-बहुत धन्यवाद।

सचिन सुपुत्र श्री सुरेंद्र
एनएसएस स्वयंसेवक
राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नलवा
जिला-हिसार, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय!

सादर नमस्कार।

आपके प्रभावी मार्गदर्शन में प्रकाशित हो रही एवं शिक्षा-विभाग को महका रही मासिक पत्रिका 'शिक्षा सारथी' का नूतन अंक (जुलाई-2023) पढ़कर शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। इसके लिए आपको कोटि-कोटि साधुवाद। राष्ट्र-सेवा के भाव को जगाना ही एनएसएस का मुख्य उद्देश्य है। इस विशिष्ट उद्देश्य को सम्पादन मण्डल ने पत्रिका के इस अंक में प्राथमिकता से प्रकाशित किया, इसके लिए आपका पुनः आभार। हरियाणा सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर के इन शिविरों की मेज़बानी करना गौरव का विषय है। माननीय शिक्षा मंत्री महोदय श्री कँवरपाल से लेकर निदेशक माध्यमिक शिक्षा डॉ. अंशज सिंह एवं अन्य सुधी स्तंभकारों ने अपने-अपने आलेखों में राष्ट्र सेवा योजना के बारे में विस्तृत रूप से वर्णन करते हुए कहा है कि हमारे युवाओं में सेवा तथा कर्तव्य के भावों का होना नितान्त आवश्यक है। सेवा और कर्तव्य के भावों से युक्त युवा-पीढ़ी ही देश का सही मार्गदर्शन कर सकती है। कक्षा-शिक्षण को रोचक बनाने के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करें तो विषय-विशेषज्ञ राजेश यादव का आलेख हम शिक्षकों के लिए प्रेरणादायी है। अलीमुद्दीन खान का आलेख भी मुझे काफ़ी रोचक व शिक्षाप्रद लगा, क्योंकि प्राथमिक स्तर पर कक्षा में सुनाई जाने वाली कहानियाँ कक्षा के वातावरण को रोचक बनाने में मददगार सिद्ध होती हैं। पत्रिका की समस्त विषय-वस्तु प्रभावी एवं शिक्षाप्रद होने के साथ-साथ रोचक भी है। सत्यवीर नाहड़िया का आलेख भी सराहनीय है क्योंकि शिक्षा विभाग में भी कला को समर्पित कलाकारों की कोई कमी नहीं है, केवल उन प्रतिभाओं को निखरने के लिए उपयुक्त मंच की आवश्यकता है। राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय द्वारा 'विश्व ड्रग्स दिवस' पर दिया गया बहुत ही संवेदनशील उद्बोधन भी मुझे हृदयस्पर्शी लगा। अन्त में, मैं यही कहूँगा कि 'शिक्षा सारथी' प्रकाश-पुंज बनकर हम पाठकों के हृदय तल पर यूँ ही विराजमान रहे।

पवन कुमार स्वामी, अध्यापक
रामासंप्रावि चुंगी-7, लोहारू
जिला- भिवानी, हरियाणा

चँदा मामा 'टूर' के

हम चाँद को देखें, दुनिया हमें
यूँ अंकित हुए इतिहास में
ज्ञान, विज्ञान, प्रज्ञान का ले परचम
चार चाँद लगे जोश और विश्वास में
दस्तक दी फिर पूरी तैयारी से
भेजा धराने असीम स्नेह
दूर के नहीं, बस एक टूर के हुए
अब चंदा मामा निःसंदेह
चोट पुरानी सुलग रही थी
छूटा जो एक ख्वाब था
संपर्क टूटा था, संकल्प नहीं
हौसला बेहिसाब था
लो निशां कदमों के छोड़ दिए हैं
सुनहरे पन्ने जोड़ दिए हैं
स्वछंद, उन्मुक्त हुआ अब भारत
आशाओं के रूख मोड़ दिए हैं
माथे का तिलक बना इसरो
उम्मीदों और अभिलाषाओं सहित
ऊँचा और ऊँचा उड़े तिरंगा हमारा
लक्ष्य हो सम्पूर्ण जगत का हित
जय विज्ञान, जय हिंदुस्तान

ज्योत्सना कलकल
प्रवक्ता रसायन विज्ञान
रावमावि गुरुग्राम, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

निपुण हरियाणा जनभागीदारी कार्यक्रम

रक्षाबंधन के अवसर पर पत्र-लेखन गतिविधि

कक्षा 3 - 5 के छात्र-छात्राओं के लिए 16 अगस्त 2023 से 25 अगस्त 2023 तक पत्र-लेखन गतिविधि को माता-पिता के सहयोग से जनभागीदारी कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित किया गया।

मुझे स्कूल में पढ़ने में अब बहुत मज़ा आता है, और मुझे ख़ुशी होती है कि अब आप को स्कूल में पढ़ने के लिए नयी कार्यपुस्तिका और खिलौने मिलेंगे। इनसे आपको बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा।

क्या आपको याद है हमारे खेल-खिलौनों के मस्ती भरे दिनों की? हम साथ में बहुत मजे करते थे और मुझे उम्मीद है कि हमें आगे भी मिलकर मस्ती करने का मौका मिलेगा।

पुनः आपको रक्षाबंधन की खूब सारी बधाई। आपकी भेजी राखी बहुत ही सुंदर है। मुझे आशा है आपको इस पत्र के साथ भेजा उपहार भी बहुत पसंद आया होगा।

मैं आपके साथ हमेशा खुशियों के पल इन पत्रों द्वारा साझा करता रहूँगा।

आपका प्यारा भाई,
अनुज

पोस्ट कार्ड POST CARD

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कुमारी अंजना,
सुपुत्री राजेश सिंह,
521,
सेक्टर -11, पंचकूला, हरियाणा

पिन PIN 1 3 4 1 0 9

(इस लाइन के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें) Do not write or print below this line)

सौजन्य- विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा निपुण प्रकोष्ठ